لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿٩٢﴾ كُلُّ الطَّعَامِ
كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا
بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩٤﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿٩٥﴾

आयत न० 92 से 95

(ऐ मुसलमानो) **तुम पूरी भलाई** (यानी बड़े सवाब) **को कभी ना पा सकोगे जब तक कि अपनी** (बहुत) **प्यारी चीज़ को** (अल्लाह के रास्ते में) **ख़र्च न करोगे, और** (यूं) **जो कुछ भी ख़र्च करोगे** (चाहे वो चीज़ प्यारी न हो) **अल्लाह तआ़ला उस को अच्छी तरह जानते हैं** (सवाब तो उस पर भी देंगे लेकिन पूरा सवाब पाने का वो ही तरीक़ा है)(92) **सब खाने की चीज़ें** (जो मुसलमानों के लिए हलाल हैं) **तौरेत के नाज़िल होने से पहले बनी इस्राईल पर** (भी) **हलाल थीं सिवाए उस चीज़ के जिस को** (हज़रत) **इस्राईल** (यानी याकूब अलैहिस्सलाम) **ने** (एक ख़ास वजह से) **अपने ऊपर हराम कर लिया था** (और वो फिर उन की औलाद में भी हराम चला आया तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वक़्त से उन के हराम होने का दावा कब सही हो सकता है, और अगर अब भी नहीं मानते तो ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन से) **कह दीजिए कि** (अच्छा तो) **फिर तौरेत लाओ फिर उस को पढ़ो अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो** (तो उस में कोई आयत इस बारे में निकाल दो बस उस में न दिखा सके तो झूटे साबित हुए)(93) **सो जो आदमी इस** (झूट के साबित हो जाने) **के बाद** (भी) **अल्लाह तआ़ला पर झूट बात का इल्ज़ाम लगाए** (जाए कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वक़्त से ऊंट के गोश्त को हराम किया है) **तो ऐसे लोग बड़े बेइन्साफ़ हैं**(94) **आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला ने सच कह दिया तो** (अब) **तुम** (को चाहिए कि क़ुरआन की सच्चाई के सबूत के बाद) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **के दीन** (यानी इस्लाम) **पर चलो जिसमें ज़रा कमी नहीं और वो** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम) **मुशरिक न थे**(95)।

नोटः- हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने एक बीमारी में मन्नत मानी थी कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझ को सहत दें तो जो चीज़ मुझे सबसे प्यारी है उसे छोड़ दूंगा। वो ठीक हो गये और आप को ऊंट का गोश्त सब से ज़्यादा पसन्द था तो आपने उस को छोड़ दिया मगर ऐसी मन्नत मानना हमारी शरीअ़त में जाइज़ नहीं।

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِينَ ﴿٩٦﴾ فِيهِ آيٰتٌ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ إِبْرٰهِيمَ ۚ وَ
مَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا ۗ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۗ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ
الْعٰلَمِينَ ﴿٩٧﴾

आयत न० 96 से 97

बेशक सबसे पहला घर जो लोगों (की इबादत) **के लिए** (अल्लाह के हुक्म से) **बनाया गया वो** (ख़ाना काबा) **है जो कि मक्का** (शहर) **में है** (जो) **बरकतों वाला** (है क्योंकि उसमें दीन का नफ़ा यानी सवाब) **है और** (ख़ास इबादत जैसे नमाज़ का रूख़ बताने में) **दुनिया भर के लोगों को राह दिखाने वाला** (है मतलब यह है कि हज वहां होता है और नमाज़ का सवाब हदीस की रू से वहां बहुत ज़्यादा होता है दीनी बरकत तो यह हुई और राह दिखाना यह है कि जो वहां नहीं हैं उन को इस मकान के वास्ते से नमाज़ के रूख़ का पता चलता) **है(96) इस** (ख़ाना काबा) **में** (कुछ) **खुली निशानियां** (इसकी बड़ाई व बरकत की मौजूद) **हैं** (जिनमें से एक निशानी) **मक़ामे इब्राहीम है और जो आदमी इस** (की हदों) में दाख़िल हो जाए वो (शरीअ़त की रू से) **अमन पा जाता है** (यहां तक कि वहां किसी को सज़ा भी नहीं देनी चाहिए बल्कि बाहर आने का इन्तिज़ार करें), **और अल्लाह के** (ख़ुश करने के) **वास्ते** (उन) **लोगों के ज़िम्मे इस मकान का हज करना** (फ़र्ज़) **है जो ताक़त रखते हों वहां तक** (पहुंचने) **के सफ़र की, और जो आदमी** (अल्लाह के हुक्म का) **इनकार करे तो** (अल्लाह तआ़ला का क्या नुक़सान क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला सारे दुनिया वालों से बेपरवा** (हैं किसी के न मानने पर उन का कोई काम अटकता नहीं बल्कि खुद इनकार करने वाले ही नुक़सान उठाने वाले) **हैं(97)।**

قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ شَهِيدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٨﴾ قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّونَ
عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ مَنْ آمَنَ تَبْغُونَهَا عِوَجًا وَّأَنْتُمْ شُهَدَآءُ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٩﴾ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوٓا إِنْ تُطِيعُوا فَرِيقًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوكُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كٰفِرِينَ ﴿١٠٠﴾ وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ
تُتْلٰى عَلَيْكُمْ آيٰتُ اللّٰهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهُ ۗ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٠١﴾ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٢﴾ وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيعًا وَّلَا تَفَرَّقُوا ۠ وَ
اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَآءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى
شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ آيٰتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٣﴾

आयत न० 98 से 103

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप** (इन किताब वालों से) **कह दीजिए कि ऐ किताब वालो तुम** (इस्लाम की सच्चाई साबित हो जाने के बाद) **क्यों इनकार करते हो अल्लाह तआला के हुक्मों का** (इसमें दीन की सब बातें आ गईं) **जब कि अल्लाह तआला को तुम्हारे सब कामों की ख़बर** (है क्या तुम को इससे भी डर नहीं लगता) **है(98)** (और यह भी) **कह दीजिए कि ऐ किताब वालो क्यों रोकते हो अल्लाह की राह** (यानी उसके सच्चे दीन) **से ऐसे आदमी को जो** (उस दीन के सच्चा होने पर) **ईमान ला चुका इस तरह से कि कमी** (की बातें) **तलाश करते हो उस राह के अन्दर पैदा करने के लिए** (जैसा कि मुसलमानों के दो गिरहों में झगड़ा कराने की कोशिश करना कि जिससे दीन से दूरी पैदा हो जाए) **जब कि तुम ख़ुद भी** (इस हरकत के बुरा होने की) **ख़बर रखते हो, और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों से अन्जान नहीं** (वक़्त आने पर इस की सज़ा देंगे)(99) **ऐ ईमान वालो अगर तुम कहना मानोगे किताब वालों में से किसी गिरोह का तो वो लोग तुम्हारे ईमान लाने के बाद** (ऐतक़ाद या अमल से) **तुम को काफ़िर बना देंगे(100) और** (भला) **तुम कुफ़्र कैसे कर सकते हो जब कि** (कुफ़्र को रोकने के पूरे सामान जमा हैं क्योंकि) **तुम को अल्लाह तआला के हुक्म** (कुरआन में) **पढ़ कर सुनाए जाते हैं और** (फिर) **अल्लाह के रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **तुम में मौजूद हैं, और** (याद रक्खो कि) **जो आदमी अल्लाह तआला का साथ मज़बूती से थामता है** (यानी ईमान पर पूरा जमा रहता है) **तो** (ऐसा आदमी) **ज़रूर सीधे रास्ते तक पहुंचा दिया जाता** (है यानी वो सीधे रास्ते पर होता) **है(101) ऐ ईमान वालो अल्लाह तआला से** (ऐसा) **डरा करो जैसा उससे डरना चाहिए** (यानी शिर्क व कुफ़्र की तरह सभी गुनाहों से भी बचा करो और बिना शरई वजह के लड़ना गुनाह है तो उससे बचना भी फ़र्ज़ है) **और सिवाए** (पूरे) **इस्लाम के और किसी हालत पर जान न देना** (यानी मरते दम तक पूरे इस्लाम पर जमे रहना)(102) **और मज़बूत पकड़े रहो अल्लाह तआला के सिलसिले को** (यानी दीन की बातों के मज़बूती से पाबन्द रहो) **इस तरह कि आपस में सब एक भी रहो और आपस में फूट मत डालो, और तुम पर जो अल्लाह तआला का इनआम** (हुआ) **है उस को याद करो** (कि एक वक़्त था) **जब कि तुम** (आपस में एक दूसरे के) **दुशमन थे** (यानी इस्लाम लाने से पहले) **बस अल्लाह तआला ने** (अब) **तुम्हारे दिलों में** (एक दूसरे की) **मुहब्बत डाल दी तो तुम अल्लाह तआला के** (इस) **इनआम** (दिलों की मुहब्बत) **से** (अब) **आपस में भाई-भाई** (की तरह) **हो गये, और** (एक इनआम जो असल है यह कि) **तुम लोग** (बिल्कुल) **दोज़ख़ के गढ़े के किनारे** (ही) **पर**

खड़े थे (यानी काफ़िर होने की वजह से दोज़ख़ के इतने पास कि बस मरने की देर थी) **तो इस** (गढ़े) **से अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी जान बचाई** (यानी इस्लाम नसीब किया जिससे जहन्नम से बचाया), **इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम लोगों को अपने** (और) **हुक्मों को** (भी) **बयान करके बतलाते हैं ताकि तुम लोग** (सीधे) **रास्ते पर क़ाइम रहो**(103)।

नोटः- अन्सारे मदीना के दो बड़े क़बीले ओस व ख़ज़रज थे जिनमें पुरानी दुशमनी थी इस्लाम लाने के बाद वो भाई-भाई हो गये यहूदियों ने उन्हें फिर से आपस में लड़ाने की कोशिश की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़बर हुई तो उन के पास गये और समझाया कि क्या अन्धेर है मेरे होते हुए फिर मुसलमान होने और आपस में एक होने के बाद यह क्या जहालत है क्या तुम उसी हालत में कुफ़्र की तरफ़ लौटना चाहते हो सब संभल गये और समझा कि यह शैतानी हरकत थी और एक दूसरे को गले लगा कर बहुत रोए और तौबा की इस क़िस्से में ये आयतें उतरीं।

وَ لْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَ اخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ﴿۱۰۵﴾ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّ تَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۟ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ
فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۱۰۶﴾ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَ مَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا
فِي الْاَرْضِ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۱۰۹﴾ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ تَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَ لَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ اَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۱۰﴾

आयत न० 104 से 110

और तुम में एक जमाअ़त ऐसी होना ज़रूरी है कि (और लोगों को भी) **भलाई की तरफ़ बुलाया करें और नेक कामों के करने को कहा करें और बुरे कामों से रोका करें, और ऐसे लोग** (आख़रत में सवाब से) **पूरे कामयाब होंगे**(104) **और तुम लोग उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने** (दीन में) **आपस में फूट डाली और आपस में झगड़ा किया उन के पास खुले**

हुक्म पहुंचने के बाद (मतलब यह कि यहूदियों और ईसाईयों की तरह मत बनो), **और उन लोगों के लिए** (क़ियामत के दिन) **बड़ी सज़ा होगी(105) उस दिन कुछ चेहरे चमकते होंगे और कुछ चेहरे काले** (सियाह) **होंगे तो जिन के चेहरे काले हो गये होंगे उन से कहा जाएगा क्या तुम** (ही) **लोग काफ़िर हुए थे अपने ईमान लाने के बाद तो** (अब) **अपने कुफ़्र की वजह से सज़ा का मज़ा चक्खो(106) और** (दूसरी तरफ़) **जिन** (लोगों) **के चेहरे चमकते होंगे वो अल्लाह की रहमत** (यानी जन्नत) **में** (दाख़िल) **होंगे,** (और) **वो उसमें सदा-सदा रहेंगे(107) ये** (जो ऊपर बयान हुई) **अल्लाह तआ़ला की आयतें हैं जो ठीक-ठीक हम तुम को पढ़ कर सुनाते हैं, और अल्लाह तआ़ला लोगों पर ज़ुल्म करना नहीं चाहते** (बस जो कुछ किसी के लिए इनआ़म या सज़ा रक्खी है वो सही है)**(108) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में** (है बस जब वो मालिक हैं तो सब के ज़िम्मे उन का हुक्म मानना ज़रूरी) **है, और** (किसी दूसरे के बस में कुछ न होगा बल्कि) **अल्लाह की तरफ़ सब मुकदमे लाए जाएंगे(109)** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत) **तुम लोग** (सब मज़हब वालों से) **अच्छी जमाअ़त हो जो** (आम) **लोगों** (को हिदायत का नफ़ा पहुंचाने) **के लिए भेजी गई हो** (और) **तुम लोग नेक कामों को बताते हो और बुरी बातों से रोकते हो और** (ख़ुद भी) **अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखते हो** (यहां अल्लाह पर ईमान लाने में उन सभी बातों पर यक़ीन रखना है जो अल्लाह की तरफ़ से बताई गई हैं), **ओर अगर किताब वाले** (भी जो तुम से मुख़ालफ़त कर रहे हैं तुम्हारी तरह) **ईमान ले आते तो उन के लिए ज़्यादा अच्छा होता** (कि वो भी इसी अच्छी जमाअ़त में मिल जाते, मगर वो सब मुसलमान न हुए बल्कि) **उनमें से कुछ तो मुसलमान हैं** (जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाकर इस्लाम में दाख़िल हो गये) **और ज़्यादा हिस्सा उनमें काफ़िर हैं** (कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान नहीं लाए और उन की अच्छी उम्मत में शामिल नहीं हुए)(110)।

नोटः- इस उम्मत के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी है कि इस उम्मत में क़ियामत तक एक ऐसी जमाअ़त क़ाइम रहेगी जो नेक कामों की नसीहत और बुरी बातों से रोकने की ज़िम्मेदारी पर क़ाइम रहेगी।

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ۭ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١١﴾ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ
مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَاۗءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۭ ذٰلِكَ

بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ يَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٢﴾ لَيْسُوْا
سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَ هُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَ مَا
يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَ لَاۤ
اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١٦﴾ مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَ مَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَ لٰكِنْ
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٧﴾

आयत न० 111 से 117

(मुसलमानो) **वो** (किताब वाले) **तुम को कोई** (बड़ा) **नुक़सान न पहुंचा सकेंगे सिवाए थोड़ी सी तकलीफ़ के** (यानी ज़बानी बुरा भला कह कर दिल दुखाना), **और अगर वो** (इससे ज़्यादा की हिम्मत करें और) **तुम से जंग करें तो तुम को पीठ दिखा कर भाग जाएंगे फिर किसी तरफ़ से उन की मदद भी न होगी(111) छाप दी गई उन पर रूसवाई जहां कहीं भी पाए जाएंगे मगर हां** (दो वास्तों से वो इस रूसवाई से बच सकते हैं) **एक तो अल्लाह की तरफ़ के वास्ते से** (जैसे बूढ़ों, बच्चों व औरतों पर हाथ उठाने की मनाही है और जो आदमी अपने मज़हब के हिसाब से इबादत में लगा रहता हो मुसलमानों से न लड़ता हो) **और एक इन्सानों की तरफ़ के वास्ते से** (जैसे जंग की सुलह और समझौता जो मुसलमानों के साथ हो जाए) **और हक़दार हो गये** (ये लोग) **अल्लाह तआ़ला के गुस्से के और जमा दी गई उन पर बुज़दिली** (कि दिलों में हौसला न रहा), **यह** (रूसवाई और अल्लाह का गुस्सा) **इस वजह से हुआ कि वो लोग अल्लाह तआ़ला के हुक्मों का इनकार करते थे और क़त्ल कर दिया करते थे पैग़म्बरों को** (इस तरह से कि वो क़त्ल ख़ुद उन के नज़दीक भी) **नाहक़** (होता था, और) **यह** (रूसवाई व गुस्सा) **इस वजह से भी हुआ कि उन्होंने कहना न माना और** (ताबेदारी की) **हद से निकल-निकल जाते थे(112)** (लेकिन) **ये** (किताब वाले) **सब बराबर नहीं,** (बल्कि) **उन** (ही) **किताब वालों में वो लोग भी हैं जो** (दीन के) **सीधे रास्ते पर हैं** (और) **अल्लाह की आयतें** (यानी कुरआन) **रात के वक़्तों में पढ़ते हैं और वो नमाज़ भी पढ़ते हैं(113)** (और ये लोग) **अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर** (पूरा-पूरा) **ईमान रखते हैं और** (दूसरों को भी) **नेक काम बताते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं और**

नेक कामों में दौड़ते हैं, और ये लोग (अल्लाह के यहां) **बड़े नेक लोगों में** (गिने जाते) **हैं**(114) **और ये लोग जो नेक काम करेंगे वो बर्बाद न होंगे** (यानी उन का सवाब पूरा-पूरा मिलेगा), **और अल्लाह तआ़ला परहेज़गार लोगों को अच्छी तरह जानते हैं**(115) **बेशक जो लोग काफ़िर रहे बिल्कुल भी उन के काम न आएंगे उन के माल और न औलाद अल्लाह तआ़ला के** (अज़ाब के) **मुक़ाबिले में ज़रा भी, और वो लोग दोज़ख़ी हैं,** (और) **वो सदा-सदा उसी में रहेंगे** (कभी छुटकारा न होगा)(116) **वो** (काफ़िर) **जो कुछ ख़र्च करते हैं इस दुनिया की ज़िन्दगी में उस की हालत** (बर्बाद होने में) **ऐसी है जैसे एक हवा हो जिसमें तेज़ सर्दी** (यानी पाला) **हो** (और) **वो लग जाए ऐसे लोगों की खेती को जिन्होंने** (बद दीनी से) **अपना नुक़सान कर रक्खा हो बस वो** (हवा) **उस** (खेती) **को बर्बाद कर डाले** (इसी तरह उन लोगों का ख़र्च करना आख़रत में सब बर्बाद है), **और** (इस बर्बाद करने में) **अल्लाह तआ़ला ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया लेकिन वो ख़ुद** (कुफ़्र करके जो क़ुबूल होने में रूकावट है) **अपने आप को नुक़सान पहुंचा रहे थे** (न वो कुफ़्र करते न उनके ख़ैर ख़ैरात बर्बाद होते)(117)।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ
مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۖۚ وَ مَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝١١٨ هٰۤاَنْتُمْ اُولَآءِ
تُحِبُّوْنَهُمْ وَ لَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَ اِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۖۚ وَ اِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ
الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝١١٩ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ
تَسُؤْهُمْ ۫ وَ اِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ وَ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا
يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝١٢٠ ع

आयत न० 118 से 120

ऐ ईमान वालो अपने (लोगों के) **सिवा** (दूसरे मज़हब वालों में से) **किसी को** (गहरा और) **राज़दार** (दोस्त) **मत बनाओ** (क्योंकि) **वो लोग तुम्हारे साथ फ़साद करने में कोई कसर नहीं छोड़ते,** (और दिल से भी) **तुम्हारे** (दीन दुनिया के) **नुक़सान की तमन्ना रखते हैं** (दिलों में तुम्हारी तरफ़ से इतनी नफ़रत भरी है कि कभी-कभी वो) **नफ़रत** (बात चीत में) **उन के मुंह से निकल जाती है और जितनी उनके दिलों में छुपी है वो तो कहीं ज़्यादा है,** (बस) **हम** (उन की दुशमनी

की) **निशानियां तुम्हारे सामने खोल चुके अगर तुम समझ रखते हो** (तो इन निशानियों से पहचान लो)(118) **देखो तुम** (तो) **ऐसे हो उन लोगों से मुहब्बत** (का बरताव) **रखते हो और ये लोग तुम से असल में मुहब्बत नहीं रखते** (न दिल से न बरताव से) **जब कि तुम सभी** (आसमानी) **किताबों पर ईमान रखते हो** (इसमें उन की किताबें भी है, और वो तुम्हारी किताब यानी क़ुरआन पर ईमान नहीं रखते)**, और** (तुम उनके दिखावे के ईमान से शक न करना कि वो भी तो हमारी किताब पर ईमान रखते हैं क्योंकि) **ये लोग जब तुम से मिलते हैं** (सिर्फ़ तुम्हारे दिखाने को) **कह देते हैं कि हम ईमान ले आए और जब** (तुम से) **अलग होते हैं तो तुम पर मारे ग़ुस्से के अपनी उंगलियां चबाते हैं, आप** (उन से) **कह दीजिए कि तुम मर रहो अपने ग़ुस्से में** (यानी अगर तुम मर भी जाओ तब भी मुराद पूरी न होगी)**, बेशक अल्लाह तआला अच्छी तरह जानते हैं दिलों की बातों** (को इस लिए उन के दिल की हालत बता दी है तुम) **को**(119) (उन का यह हाल है कि) **अगर तुम को कोई भलाई मिल जाए** (जैसे आपसी मेल हो, या दूसरों पर जीत हो जाए) **तो उन को बुरा लगता** (है जिस की वजह तुम से जलना) **है, और अगर तुम को कोई नुक़सान पहुंचे तो उससे** (बड़े) **ख़ुश होते हैं, और** (ये जब इतना जलते हैं तो यह न समझो कि तुम को सता पाएंगे) **अगर तुम सब्र और परहेज़गारी के साथ रहो तो इन लोगों की चाल तुम को ज़रा भी नुक़सान न पहुंचा सकेगी,** (दुनिया में तो वो नाकाम होंगे और आख़रत में दोज़ख़ की सज़ा होगी क्योंकि) **अल्लाह तआला उनके कामों को** (अपनी क़ुदरत के) **घेरे में लिए हुए हैं** (कोई काम हम से छुपा नहीं इसलिए वहां सज़ा से बचने के लिए किसी बहाने की गुन्जाइश नहीं)(120)

नोटः- मदीने के आसपास जो यहूदी क़बीले आबाद थे उनमें और अन्सारे मदीना में दोस्ती थी अन्सार के मुसलमान होने के बाद यहूदी दिल में उन से नफ़रत रखने लगे और उन को नुक़सान पहुंचाने की चालें चलने लगे और दिखावे को दोस्त बने रहे जबकि अन्सारे मदीना उन को उसी तरह दोस्त समझते और मुहब्बत रखते थे यहां उन मुसलमानों को उन यहूदियों से होशियार रहने की नसीहत की गई है।

وَ اِذۡ غَدَوۡتَ مِنۡ اَهۡلِكَ تُبَوِّئُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ مَقَاعِدَ لِلۡقِتَالِ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ۙ﴿۱۲۱﴾ اِذۡ هَمَّتۡ طَّآئِفَتٰنِ
مِنۡكُمۡ اَنۡ تَفۡشَلَا ۙ وَ اللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۲۲﴾ وَ لَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّ اَنۡتُمۡ
اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذۡ تَقُوۡلُ لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ اَلَنۡ يَّكۡفِيَكُمۡ اَنۡ يُّمِدَّكُمۡ رَبُّكُمۡ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ

مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا وَ يَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ
اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَ مَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَ لِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ؕ وَ مَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿۱۲۶﴾ ۙ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿۱۲۷﴾ لَيْسَ لَكَ مِنَ
الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِى الْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ
لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۹﴾ ع

आयत न० 121 से 129

नोटः- इन आयतों में जंगे उहद का ज़िक्र करते हुए मुसलमानों को कुछ नसीहतें की गई हैं:-

और (वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब कि आप सुबह के वक़्त** (जंग के दिन से पहले) **अपने घर से इसलिए निकले** (कि) **मुसलमानों को** (काफ़िरों से) **जंग करने के लिए** (सही) **मोर्चों पर जमा**(ने के लिए तैयार कर)**रहे थे** (फिर उसी राय के हिसाब से सब को मोर्चो पर जमा दिया)**, और अल्लाह तआ़ला** (उस वक़्त की बातें) **सब सुन रहे थे** (और उस वक़्त के हालात) **सब जान रहे थे**(121) (इसी के साथ यह क़िस्सा भी हुआ कि) **तुम** (मुसलमानों) **में से दो जमाअ़तों ने** (यानी बनी हारसा और बनी सलमा के क़बीलों ने) **दिल में सोचा कि हिम्मत हार दें** (और हम भी मुनाफ़िक़ों की तरह अपने घर जा बैठें) **और अल्लाह तआ़ला तो उन** (दोनों जमाअ़तों) **का मददगार था** (भला उन को कब हिम्मत हारने देता बस अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इस इरादे पर चलने से बचाया), **और मुसलमानो को तो बस अल्लाह तआ़ला ही पर भरोसा करना** (चाहिए और ऐसी कम हिम्मती कभी न करनी) **चाहिए(122) और अल्लाह तआ़ला ने** (तो ऐसी हालत में) **तुम को** (जंगे) **बद्र में कामयाब किया जब कि तुम बेसरोसामान थे** (क्योंकि आदमी भी काफ़िरों के मुक़ाबिले कम और हथियार भी बहुत कम थे) **सो** (क्योंकि यह कामयाबी तक़्वे यानी अल्लाह से डरने की वजह से थी जिसमें जमे रहना सब्र करना भी दाख़िल है तो तुम को चाहिए आगे भी) **अल्लाह तआ़ला से डरते रहा करो ताकि तुम** (इस मदद की नेमत का) **शुक्र अदा करो**(123) (जंगे बद्र में अल्लाह तआ़ला की यह मदद उस वक़्त हुई थी) **जब कि** (ऐ पैग़म्बर) **आप मुसलमानों से यह कह रहे थे कि क्या तुम को** (दिल की हिम्मत के लिए) **यह बात काफ़ी न होगी कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़रिशतों से जो** (इसी काम के लिए आसमान से) **उतारे जाएं** (जिससे पता चला कि बड़े दर्जे के फ़रिशते होंगे वर्ना जो पहले से ज़मीन पर मौजूद थे उन से भी यह काम लिया जा

सकता था)(124) **हां क्यों नहीं** (काफ़ी होगा और मुक़ाबिले के वक़्त) **अगर जमे रहोगे और अल्लाह से डरते रहोगे** (यानी कोई बात हुक्म के ख़िलाफ़ न करोगे) **और वो लोग तुम पर अचानक हमला कर दें** (जिसमें कहीं से मदद पहुंचना मुश्किल होता है) **तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करेगा पांच हज़ार फ़रिश्तों से जो एक ख़ास अन्दाज़ के बनाए हुए होंगे**(125) **और अल्लाह तआला ने यह मदद सिर्फ़ इस लिए की ताकि तुम्हारे लिए** (जीत की) **ख़ुशख़बरी हो और तुम्हारे दिलों को इससे तसल्ली हो जाए,** (वर्ना) **मदद** (और जीत) **तो सिर्फ़ अल्लाह की तरफ से है जो कि ज़बरदस्त** (ताक़त वाले) **हैं** (कि वैसे भी जीत दे सकते हैं लेकिन) **हिकमत वाले** (भी हैं जैसे सामान जीत के लिए ज़रूरी समझते हैं वैसे ही सामान पैदा कर देते) **हैं**(126) (और जंगे बद्र में यह मदद और जीत इस लिए दी गई) **ताकि काफ़िरों में से एक गिरोह को ख़त्म कर दे** (जैसा कि इस जंग में काफ़िरों के सत्तर सरदार मारे गये) **या उन** (में से कुछ) **को ज़लील** (व रूसवा) **करदे फिर वो नाकाम लौट जाएं** (और ये ही जंग का अन्जाम हुआ कि सत्तर पकड़े गये और बाक़ी जान बचा कर भागे)(127) **आप का** (ऐ पैग़म्बर किसी के मुसलमान होने या काफ़िर रहने में) **कोई दख़्ल नहीं अल्लाह तआला उन को** (अपनी रहमत से) **या तो तौबा** (यानी इस्लाम) **की तौफ़ीक़ दें और या उन को** (दुनिया ही में) **कोई सज़ा दें** (और यह दुनिया में सज़ा कुछ ग़लत भी नहीं) **क्योंकि वो ज़ुल्म भी बड़ा कर रहे हैं**(128) **और अल्लाह ही मालिक है जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है, वो जिस को चाहे मुआफ़ करें** (यानी इस्लाम नसीब कर दें) **और जिस को चाहे अज़ाब दें** (यानी इस्लाम नसीब न हो), **और अल्लाह तआला तो बड़े मुआफ़ करने वाले** (और) **बड़े रहमत करने वाले हैं**(129)।

يَاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَاۡكُلُوا الرِّبٰٓوا اَضۡعَافًا مُّضٰعَفَةً ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ ۚ﴿۱۳۰﴾ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىۡۤ اُعِدَّتۡ لِلۡكٰفِرِيۡنَ ۚ﴿۱۳۱﴾

आयत न० 130 से 131

ऐ ईमान वालों सूद मत खाओ (यानी मत लो असल से) **कई गुना ज़्यादा** (करके) **और अल्लाह तआला से डरो उम्मीद है कि तुम कामयाब** (हो यानी दोज़ख़ से छुटकारा मिले और जन्नत नसीब) **हो**(130) **और उस आग से बचो जो** (असल में) **काफ़िरों के लिए तैयार की गई है** (और आग से बचने की सूरत यह है कि सूद जैसे हराम कामों से बचो)(131)।

नोटः- सूद ज़्यादा मत खाओ का मतलब यह नहीं कि कम लेना जाइज़ है, हराम तो हर सूरत में है

जैसा कि दूसरी आयतों में आया है बल्कि मतलब यह है कि वो लेते लेते ज़्यादा ही हो जाता है।

وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۚ﴿۱۳۲﴾ وَ سَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَ
الْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۱۳۳﴾ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ الْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَ الْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ
وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۚ﴿۱۳۴﴾ وَ الَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا
لِذُنُوْبِهِمْ ۪ وَ مَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۪۫ وَ لَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَ هُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ
مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۳۷﴾ هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ
مَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۸﴾

आयत न० 132 से 138

और (ख़ुशी से) **कहा मानो अल्लाह का और** (उसके) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **का उम्मीद है कि तुम पर रहम हो** (यानी क़ियामत में)(132) **और दौड़ो बख़्शिश की तरफ़ जो तुम्हारे रब की तरफ़ से** (नसीब) **हो और** (दौड़ो) **जन्नत की तरफ़** (मतलब यह है कि ऐसे नेक काम करो कि जिससे अल्लाह तआ़ला तुम्हारी बख़्शिश करदें और तुम को जन्नत मिले, और वो जन्नत ऐसी है) **जिसकी चौड़ाई ऐसी है जैसे सब आसमान और ज़मीन** (उसमें समा जाएं और) **वो तैयार की गई है** (उन) **अल्लाह से डरने वालों के लिए**(133) **जो** (ऐसे लोग हैं कि नेक कामों में) **ख़र्च करते हैं** (हर हाल में) **ख़ुशहाली में** (भी) **और तंगी में** (भी) **और** (जो) **गुस्से के पी जाने वाले और लोगों** (की ग़लतियों) **को मुआ़फ़ करने वाले हैं, और अल्लाह तआ़ला ऐसे नेक लोगों से** (जिनमें ये आदतें हों) **मुहब्बत रखते हैं**(134) **और** (दूसरे दर्जे के मुसलमान) **ऐसे लोग** (हैं) **कि जब कोई खुला गुनाह या** (बुरा काम करके) **अपनी जान का नुक़सान करते हैं तो** (फ़ौरन) **अल्लाह तआ़ला** (की शान और सज़ा) **को याद कर लेते हैं फिर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगते हैं, और अल्लाह के सिवा और कौन है जो गुनाहों को मुआ़फ़ करता हो, और वो लोग अपने** (बुरे) **काम पर जानते बूझते हट नहीं करते**(135) **उन लोगों का बदला बख़्शिश है उनके रब की तरफ़ से और** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ हैं कि उनके** (पेड़ों और मकानों के) **नीचे से नहरें बहती होंगी और वो उन में सदा-सदा रहने वाले होंगे, और** (यह कैसा) **अच्छा बदला है** (नेक) **काम करने वालों का**(136) **बेशक तुम से पहले** (ज़मानों में) **अलग-अलग राह वाले हो**

चुके हैं तो तुम ज़मीन में चल फिर कर देख लो कि (पैग़म्बरों को) **झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ** (यानी हलाक व बर्बाद हुए)(137) **यह बयान काफ़ी है सभी लोगों के लिए** (कि अगर सोचें तो इससे सबक़ ले सकते हैं) **और हिदायत और नसीहत है ख़ास अल्लाह से डरने वालों के लिए**(138)।

وَ لَا تَهِنُوْا وَ لَا تَحْزَنُوْا وَ اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٣٩ اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ
مِّثْلُهٗ ؕ وَ تِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ يَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَ اللّٰهُ لَا
يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٤٠ وَ لِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ يَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٤١ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَ لَمَّا
يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَ يَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ۝١٤٢ وَ لَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠
فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝١٤٣

आयत न० 139 से 143

नोटः- जंगे उहद के मौक़े पर थोड़ी देर की हार देख कर और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शहादत की झूटी ख़बर सुन कर कुछ मुसलमानों का मैदान छोड़ देना फिर उस पर बहुत अफ़सोस और ग़म करना इस पर उन की तसल्ली के लिए ये आयतें उतरीं:-

और तुम (अगर इस वक़्त हार गये तो क्या हुआ) **हिम्मत मत हारो और ग़म न करो और** (आख़िर) **तुम ही कामयाब रहोगे अगर तुम पूरे मोमिन हो**(139) **अगर तुम को** (इस वक़्त) **चोट पहुंची है तो उन** (दुशमनों) **को भी ऐसी ही चोट पहुंच चुकी है** (यानी जंगे बद्र में), **और** (हमारा तरीक़ा यह है कि) **हम इन दिनों को** (यानी हार जीत के ज़माने को) **लोगों के बीच अदलते बदलते रहते हैं** (यानी कभी एक क़ौम को हावी कर दिया कभी दूसरी को) **ताकि अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को जांच लें** (क्योंकि मुसीबत के वक़्त सच्चे और नेक का इम्तिहान हो जाता है) **और तुम में कुछ को शहीद बनाना था, और अल्लाह तआ़ला ज़ुल्म** (कुफ़्र व शिर्क) **करने वलों से मुहब्बत नहीं रखते** (बस यह शक न किया जाए कि उन को मुहब्बत की वजह से जीत दी हो हरगिज़ नहीं)(140) **और** (एक छुपी भलाई इसमें यह भी है) **ताकि** (गुनाहों के) **मैल कुचैल से साफ़ कर दे ईमान वालों को** (क्योंकि मुसीबत से इन्सान में सुधार आ जाता है) **और मिटादे काफ़िरों को** (कि जीत से काफ़िरों की हिम्मत बढ़ेगी फिर मुक़ाबिले में आएंगे और बर्बाद होंगे दूसरे यह कि

मुसलमानों पर ज़ुल्म करने से अल्लाह के अ़ज़ाब में पकड़े जाएंगे)(141) **भला क्या तुम यह समझते हो कि जन्नत में** (यूंही) **दाख़िल हो जाओगे जब कि अल्लाह तआ़ला ने** (खुले तौर पर) **उन लोगों को जांच कर देखा ही नहीं जिन्होंने तुम में से** (अच्छी तरह) **जिहाद किया हो और जो जिहाद में पूरी तरह जमे रहने वाले हों(142) और तुम तो** (शहीद होकर) **मरने की** (बड़ी) **तमन्ना किया करते थे मौत के सामने आने से पहले, सो** (जब) **उस** (तमन्ना के सामान) **को खुली आंखों देख लिया** (फिर उस को देख कर क्यों भागने लगे और वो तमन्ना कहां भूल गये)(143)

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَ مَنْ
يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَ سَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَ مَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَ مَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَ مَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَ سَنَجْزِى
الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ وَ كَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِىٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَ هَنُوْا لِمَاۤ اَصَابَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ مَا
ضَعُفُوْا وَ مَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَ مَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ
اِسْرَافَنَا فِىْۤ اَمْرِنَا وَ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَ انْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۷﴾ فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَ حُسْنَ
ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴۸﴾

आयत न० 144 से 148

और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **सिर्फ़ रसूल ही तो हैं** (ख़ुदा तो नहीं जिस को मौत न आए या क़त्ल न किया जा सके), **आप से पहले बहुत रसूल हो चुके हैं** (इसी तरह आप भी एक दिन दुनिया से चले जाएंगे), **तो अगर आप का इन्तिक़ाल हो जाए या आप शहीद हो जाएं तो क्या तुम लोग** (जिहाद या इस्लाम से) **उल्टे फिर जाओगे** (जैसा कि इस क़िस्से में कुछ मुसलमान जंगे उहद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शहादत की झूटी ख़बर सुन कर मैदान से भाग पड़े थे और मुनाफ़िक़ उन को दीन से फिरने को उकसा रहे थे), **और जो आदमी** (जिहाद या इस्लाम से) **उल्टा फिर जाएगा तो अल्लाह तआ़ला का कोई नुक़सान न करेगा** (बल्कि अपना ही कुछ खोएगा), **और अल्लाह तआ़ला जल्दी ही** (यानी क़ियामत में अच्छा) **बदला देंगे शुक्र अदा करने वालों को** (जो अल्लाह तआ़ला के इनआ़म को याद करके उसकी ताबेदारी करते रहते हैं)(144) **और** (किसी के मरने से इतना घबराना भी बेकार है क्योंकि पहली बात तो) **किसी आदमी को मौत नहीं**

आसकती बिना अल्लाह के हुक्म के (दूसरे किसी की मौत भी आती है तो) **अपने लिखे वक़्त पर आती है** (वक़्त से पहले हरगिज़ नहीं आ सकती), **और जो आदमी** (अपने नेक कामों और कोशिश में) **दुनिया का बदला चाहता है तो हम उस को दुनिया का हिस्सा** (जितना चाहते हैं) **दे देते हैं** (और आख़रत में उसके लिए कुछ हिस्सा नहीं) **और जो आदमी** (अपने नेक कामों व कोशिश में) **आख़रत का बदला चाहता है** (जैसे जिहाद में इस लिए जमा रहा कि यह कोशिश आख़रत के सवाब की है) **तो हम उस को आख़रत** (का हिस्सा) **देंगे, और बहुत जल्दी** (अच्छा) **बदला देंगे** (ऐसे) **शुक्र अदा करने वालों को** (जो नेक कामों में आख़रत की नेमतें चाहें)(145) **और बहुत पैग़म्बर हो चुके हैं जिन के साथ मिल कर बहुत से अल्लाह वालों ने** (काफ़िरों से) **जंग की न उन्होंने हिम्मत हारी उन मुसीबतों की वजह से जो उन पर अल्लाह की राह में आईं और न उन** (के दिल या बदन) **का ज़ोर घटा और न वो** (दुशमन के सामने) **दबे** (कि उन से लाचारी और ख़ुशामद की बातें करने लगें), **और अल्लाह तआ़ला को ऐसे सब्र करने वालों** (यानी पक्के इरादे वालों) **से मुहब्बत है**(146) (और कामों में तो वो क्या डगमगाते) **उन की ज़बान से भी तो इस के सिवा और कुछ नहीं निकला कि उन्होंने** (अल्लाह तआ़ला से) **दुआ़ की या हमारे रब हमारे गुनाहों को और हमारे कामों के हद से आगे निकल जाने को मुआ़फ़ कर दीजिए और** (काफ़िरों के मुक़ाबिले में) **हमारे पांव जमाए रखिए और हम को काफ़िर लोगों पर जीत दीजिए**(147) **तो** (इस जमे रहने और दुआ़ की बरकत से) **उन को अल्लाह तआ़ला ने दुनिया का** (अच्छा) **बदला भी दिया** (यानी जीत व कामयाबी) **और आख़रत का भी अच्छा बदला दिया** (यानी जन्नत), **और अल्लाह तआ़ला को ऐसे नेक लोगों से मुहब्बत है**(148)।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾

आयत न० 149 से 150

ऐ ईमान वालो अगर तुम कहा मानोगे काफ़िरों का तो वो तुम को (कुफ़्र की तरफ़) **उल्टा फेर देंगे** (यानी वो तुम को दीन से हटाना और बिचलाना चाहते हैं इसलिए ऐसी बातें करते हैं जिससे तुम शक में पड़ जाओ) **फिर तुम** (हर तरह) **नाकाम हो जाओ** (मतलब यह कि वो तुम्हारे दोस्त नहीं चाहे दोस्ती जिताएं)(149) **बल्कि अल्लाह तआ़ला ही तुम्हारा दोस्त है और वो सबसे अच्छा मदद करने वाला है** (इसलिए मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह तआ़ला पर यक़ीन रक्खें उसी की

मदद पर भरोसा करें दुशमन अगर तुम्हारी मदद की कुछ राय भी दें तो अल्लाह व रसूल के हुक्मों के ख़िलाफ़ उस पर न चलो)(150)।

नोटः- मुनाफ़िक़ों ने जंगे उहद में हुज़ूर की शहादत की अफ़वाह सुन कर राय दी कि जब हुज़ूर ही न रहे तो हम अपना पुराना दीन ही क्यों न अपना लें जिससे सारे झगड़े मिट जाएं इसलिए मुसलमानों को उन से होशियार रहने को कहा गया है।

سَنُلْقِیْ فِیْ قُلُوْبِ الَّذِیْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ یُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَ بِئْسَ
مَثْوَى الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَ لَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَ تَنَازَعْتُمْ فِی
الْاَمْرِ وَ عَصَیْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ مِنْكُمْ مَّنْ یُّرِیْدُ الدُّنْیَا وَ مِنْكُمْ مَّنْ یُّرِیْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ
صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِیَبْتَلِیَكُمْ ۚ وَ لَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۵۲﴾

आयत न० 151 से 152

नोटः- इन आयतों में जंगे उहद के कुछ हालात और उस मौक़े पर अल्लाह तआ़ला की मदद का कुछ बयान है।

हम अभी डाले देते हैं रौब (और डर) **काफ़िरों के दिलों में इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह तआ़ला का साझी एक एक ऐसी चीज़ को ठहराया जिस** (के साझी होने) **पर अल्लाह तआ़ला ने कोई दलील नहीं उतारी** (यानी ऐसी दलील जिस का शरीअ़त में ऐतबार हो यूं तो हर जाहिल अपनी कोई दलील पेश किया ही करता है) **और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और वो बहुत बुरा ठिकाना है ज़ालिमों का(151) और बेशक अल्लाह तआ़ला ने तुम से अपना वादा** (मदद का) **सच्चा कर दिखाया जिस वक़्त कि तुम** (जंग के शुरू में) **उन काफ़िरों को अल्लाह के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे** (और यह तुम्हारी जीत धीरे-धीरे बढ़ती गई) **यहां तक कि तुम ख़ुद ही** (राय में) **कमज़ोर हो गये** (इस तरह की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पीछे की तरफ़ मोर्चे पर जो पचास सिपाही बिठाए थे जीत देख कर उनमें कुछ यह सोचने लगे कि अब यहां जमे रहने की ज़रूरत नहीं रही और हमें भी दुशमन के मुक़ाबिले में साझी हो जाना चाहिए) **और आपस में** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के) **हुक्म में अलग राय करने लगे** (कुछ तो उसी जगह जमे रहे और कुछ हट गये) **और तुम** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के) **कहने पर न चले बाद इसके**

कि तुम को तुम्हारी मन भाती बात (आंखों से) **दिखा दी** (थी यानी मुसलमानों की जीत दिखादी) **थी,** (और उस वक़्त तुम्हारी यह हालत थी कि) **तुम में से कुछ तो वो थे जो दुनिया** (का माल) **चाहते थे** (यानी दुशमनों का पीछा करके ग़नीमत का माल जमा करना चाहते थे) **और कुछ तुम में वो थे जो** (सिर्फ़) **आख़रत के चाहने वाले थे** (इसलिए अल्लाह तआला ने आगे के लिए अपनी मदद को बन्द कर लिया) **फिर तुम को इन काफ़िरों** (पर हावी आने) **से हटा दिया ताकि अल्लाह तआला तुम को आज़माए** (कि उस वक़्त मोमिन और मुनाफ़िक़ का पता चल गया) **और यक़ीन जानो कि अल्लाह तआला ने तुम को मुआफ़ कर दिया** (अब आख़रत में पकड़ न होगी), **और अल्लाह तआला बड़ी महरबानी करने वाले हैं मुसलमानों** (के हाल) **पर(152)।**

إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُنَ عَلَىٰٓ أَحَدٍ وَّالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِيٓ أُخْرٰىكُمْ فَأَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلٰى مَا
فَاتَكُمْ وَلَا مَآ أَصَابَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٣﴾ ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا
يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَآئِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنْفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۗ يَقُولُونَ
هَلْ لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ۗ يُخْفُونَ فِيٓ أَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۗ يَقُولُونَ لَوْ
كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ۗ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلٰى
مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ﴿١٥٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۚ وَ
لَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٥٥﴾

आयत न० 153 से 155

(और वो वक़्त याद करो) **जब तुम** (मैदाने जंग से भागते हुए जंगल को) **मुंह उठाए चले जा रहे थे और किसी को मुड़ कर भी न देखते थे और रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **तुम्हारे पीछे की तरफ़ से तुम को पुकार रहे थे** (कि इधर आओ इधर आओ मगर तुमने सुना ही नहीं) **सो अल्लाह तआला ने तुम्हें** (हार का) **ग़म दिया** (तुम्हारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को) **ग़म देने की वजह से ताकि** (इस बदले और मुसीबत से तुम मज़बूत हो जाओ जिससे फिर) **तुम दुःखी न हुआ करो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से निकल जाए और न उस मुसीबत पर जो तुम को पहुंच जाए, और अल्लाह तआला सब ख़बर रखते हैं तुम्हारे सब कामों की**

(इसलिए तुम जैसा करते हो ऐसा ही बदला देते हैं)(153) **फिर अल्लाह तआ़ला ने इस ग़म के बाद तुम पर चैन** (और तसल्ली) **भेज दी यानी ऊंघ** (जब काफ़िर मैदान से वापस हो गये उस वक़्त ग़ैब से मुसलमानों पर ऊंघ छा गई जिस से सब ग़म जाता रहा) **कि तुम में से एक जमाअ़त** (यानी मुसलमानों) **पर तो नींद छा रही थी और एक जमाअ़त वो थी** (यानी मुनाफ़िक़ों की) **कि उन को अपनी जान ही की फ़िक्र पड़ रही थी** (कि देखिये यहां से बच कर भी जाते हैं) **वो लोग अल्लाह तआ़ला के साथ ग़लत गुमान कर रहे थे जो बेवक़ूफ़ी की सोच थी, वो कह रहे थे क्या हमारा कुछ बस चलता है** (मतलब यह था कि हमारी राय किसी ने न सुनी जो जंग से पहले हमने दी थी कि मुक़ाबिले के लिए शहर से बाहर न निकलो बेबात सब को मुसीबत में फ़ंसा दिया), **आप कह दीजिए कि बस तो सब अल्लाह ही का** (चलता) **है** (मतलब यह कि अगर तुम्हारी राय पर चलते तब भी जो मुसीबत आने वाली थी आकर रहती), **ये लोग अपने दिलों में ऐसी बात छुपा कर रखते हैं जिस को आप के सामने नहीं खोलते, कहते हैं कि अगर हमारा कुछ बस चलता** (यानी हमारी राय मानी जाती) **तो हम** (में जो लोग यहां क़त्ल हुए हैं वो) **यहां क़त्ल न होते** (जिस का मतलब यह हुआ कि नसीब कोई चीज़ नहीं), **आप कह दीजिए कि अगर तुम लोग अपने घरों में भी रहते तब भी जिन लोगों के नसीब में क़त्ल होना लिखा जा चुका था वो लोग अपने ठिकानों की तरफ़** (आने के लिए) **निकल पड़ते जहां वो** (क़त्ल हो कर) **गिरे हैं** (यानी यह नुक़सान तो टलने वाला न था) **और** (इसके फ़ाइदे बहुत बड़े थे क्योंकि) **जो कुछ हुआ इस लिए हुआ ताकि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे मन की बात** (यानी ईमान) **को आज़माए** (क्योंकि इस मुसीबत के वक़्त मुनाफ़िक़ों का मुनाफ़िक़ होना खुल गया और मोमिनों का ईमान और ज़्यादा हो गया) **और ताकि तुम्हारे दिलों को** (शक और वसवसों से) **साफ़ कर दे** (क्योंकि मुसीबत के वक़्त मोमिन का ध्यान हर तरफ़ से हट कर सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ लग जाता है), **और अल्लाह तआ़ला सब मन की बातों को अच्छी तरह जानते हैं** (उन को आज़माने की ज़रूरत नहीं मगर इस लिए आज़माते हैं कि मुजरिम का जुर्म खुल कर सामने आ जाए)(154) **बेशक तुम में से जिन लोगों ने** (जंग के मैदान से) **पीठ फेर दी थी जिस दिन कि वो दोनों फ़ौजें** (मुसलमानों और काफ़िरों की उहद के दिन) **आपस में लड़ीं** (इस की वजह) **इसके सिवा और कुछ नहीं हुई कि उन को शैतान ने बहका दिया उनके कुछ** (पिछले) **कामों की वजह से** (यानी उन से कुछ ग़लती ऐसी हो गई थी जिससे शैतान को और गुनाह करा देने की चाहत हुई और उस की वो चाहत पूरी भी हो गई) **और यक़ीन रक्खो कि अल्लाह तआ़ला ने उन को मुआ़फ़ कर दिया, बेशक अल्लाह तआ़ला**

बड़े मुआ़फ़ करने वाले बड़ी सहार वाले हैं (कि ग़लती करने के वक़्त भी कोई सज़ा नहीं दी)(155)

नोटः- बस जब सहाबा किराम की मुआ़फ़ी का ऐलान हो गया तो किसी को उन पर किसी क़िस्म का एतराज़ का कोई हक़ नहीं।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا
عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَ مَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ۝١٥٦ وَ لَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝١٥٧ وَ لَئِنْ مُّتُّمْ
اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِالَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ۝١٥٨ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَ لَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا
مِنْ حَوْلِكَ ۪ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَ شَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ۝١٥٩

आयत न० 156 से 159

ऐ ईमान वालो तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जो (असलीयत में) **काफ़िर हैं** (चाहे दिखावे को इस्लाम का दावा करते हों) **और कहते हैं अपने** (ख़ानदानी या मिलने वाले) **भाइयों के बारे में जब कि वो लोग ज़मीन में कहीं सफ़र करते हैं** (और वहां मर जाते हैं) **या वो लोग कहीं जिहाद करते हैं** (और उस में नसीब से क़त्ल हो जाते हैं तो वो मुनाफ़िक़ कहते हैं) **कि अगर ये लोग हमारे पास रहते** (सफ़र और जंग में न जाते) **तो न मरते और न मारे जाते** (यह बात उनके दिल और ज़बान पर इसलिए आती है) **ताकि अल्लाह तआ़ला इस बात को उनके दिलों के लिए पछतावे का सामान बना दे** (यानी नतीजा इस तरह की बातों का पछतावे के सिवा कुछ नहीं), **और ज़िन्दगी और मौत तो अल्लाह देता है** (चाहे सफ़र हो या वतन और जंग हो या अमन), **और अल्लाह तआ़ला जो कुछ तुम कर रहे हो सब देख रहे हैं** (तो अगर तुम भी ऐसी बातें करो या सोचो तो वो अल्लाह तआ़ला से छुपी न रहेंगी)(156) **और अगर तुम लोग अल्लाह की राह में मारे जाओ या कि** (अल्लाह की राह में) **मर जाओ** (तो यह कोई नुक़सान नहीं नफ़ा ही नफ़ा है क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला के पास की बख़्शिश और रहमत** (दुनिया की) **उन चीज़ों से** (बहुत) **बढ़ कर है जिन को ये लोग जमा कर रहे** (हैं और इसी के लालच में ज़िन्दगी को प्यारी रखते) **हैं**(157) **और अगर तुम** (वैसे भी) **मर गये या मारे गये** (तब भी) **ज़रूर अल्लाह ही के पास जमा किये जाओगे** (बस पहली बात तो मौत टलती नहीं दूसरे अल्लाह के पास जाने से किसी

हाल बच नहीं सकते और दीन की राह में मरना या मारा जाना तो बख़्शिश और रहमत का सामान है तो फिर वैसी मौत से दीन ही की राह में जान देना अच्छा है)(158) **इसके बावजूद** (कि सहाबा किराम से जंग के मैदान में ऐसी ग़लती हुई जिस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नाराज़ होने का हक़ था) **अल्लाह ही की रहमत की वजह से** (जो कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर है) **आप ने उन के साथ नर्मी का बर्ताव किया और अगर आप** (अल्लाह न करे) **सख़्त दिल वाले और सख़्त मिज़ाज होते तो ये** (बेचारे) **आप के पास से सब तितर-बितर हो जाते** (फिर उन को ये फ़ाइदे और बरकतें कहां नसीब होतीं) **सो** (जब आपने बरताव में ऐसी नर्मी की तो उन से जो ग़लती आप का कहना न मानने में हो गई उस को दिल से भी) **उन को मुआ़फ़ कर दीजिए और** (उनसे अल्लाह तआ़ला के हुक्म में जो ग़लती हुई उसके लिए अल्लाह तआ़ला से भी) **आप उन के लिए मुआ़फ़ी की दुआ़ कीजिए** (जिससे उन को और तसल्ली हो) **और उन से ख़ास ख़ास बातों में** (उसी तरह) **मशवरा लेते रहा कीजिए** (ताकि इस ख़ास महरबानी से उन के दिलों से ग़म धुल जाए) **फिर** (मशवरा लेने के बाद) **जब आप** (किसी एक तरफ़) **राय पक्की करलें** (चाहे वो उनके मशवरे के मुवाफ़िक़ है या ख़िलाफ़ हो) **तो अल्लाह तआ़ला पर भरोसा** (करके उस को कर लिया) **कीजिए, बेशक अल्लाह तआ़ला ऐसे भरोसा करने वालों से मुहब्बत रखते हैं**(159)।

اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ۗ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا
كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۱﴾ اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۗ وَبِئْسَ
الْمَصِيْرُ ﴿۱۶۲﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ
رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۶۴﴾

आयत न० 160 से 164

अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारा साथ दें तब तुम से कोई जीत नहीं सकता और अगर तुम्हारा साथ न दें तो इस के बाद ऐसा कौन है जो तुम्हारा साथ (दे और तुम्हें जिता) **दे, और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर ईमान वालों को भरोसा करना चाहिए**(160) **और नबी की यह शान नहीं कि वो** (नऊ़ज़ुबिल्लाह अमानत में) **ख़ियानत** (यानी धोका या घोटाला) **करे, और जो**

आदमी ख़ियानत करेगा वो आदमी उस ख़ियानत की हुई चीज़ को क़ियामत के दिन (हश्र के मैदान में) **हाज़िर करेगा** (ताकि सब लोगों को पता चले और सब के सामने रूसवाई हो) **फिर हर** (ख़ियानत करने वाले) **आदमी को उस के किये का** (दोज़ख़ में) **पूरा बदला मिलेगा और उन पर बिल्कुल ज़ुल्म न होगा** (कि जुर्म से ज़्यादा सज़ा मिले)(161) **सो ऐसा आदमी जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चलता हो** (जैसे पैग़म्बर) **क्या वो उस आदमी के बराबर हो जाएगा जिससे अल्लाह नाराज़ हो और उसका ठिकाना दोज़ख़ हो** (जैसे ख़ियानत करने वाला), **और वो बहुत बुरा ठिकाना है**(162) (हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते बल्कि) **ये लोग अल्लाह के नज़दीक अलग-अलग दर्जे में होंगे** (कि कहना मानने वाले प्यारे और जन्नती और कहना न मानने वाले दोज़ख़ी हैं), **और अल्लाह तआ़ला अच्छी तरह देखते हैं उनके किये कामों को** (इसलिए हरेक से उसके हिसाब से बरताव करेंगे)(163) **सचमुच अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों पर** (बड़ा) **अहसान किया जब कि उनके बीच में उन्हीं में से ऐसे** (बड़ी शान वाले) **पैग़म्बर को भेजा कि वो उन लोगों को अल्लाह तआ़ला की आयतें** (और हुक्म) **पढ़ पढ़ कर सुनाते हैं और** (खुली और छुपी गन्दगियों से) **उन लोगों की सफ़ाई करते रहते हैं और उन को** (अल्लाह की) **किताब और समझ की बातें बताते रहते हैं और बेशक ये लोग** (आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से) **पहले से खुली ग़लती** (यानी शिर्क व कुफ़्र) **में** (गरिफ़्तार) **थे**(164)।

नोटः- यहां नसीहत की गई हैं कि ग़नीमत का माल जमा करने में इतनी जल्दी करने की ज़रूरत न थी जिससे हार का मुंह देखना पड़ा क्योंकि जो माल भी जमा होता उस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्साफ़ से बान्ट देते क्योंकि कोई नबी माले ग़नीमत में ख़ियानत नहीं कर सकता।

اَوَ لَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾ وَ مَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَ لِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾ وَ لِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ
نَافَقُوْا ۚۖ وَ قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ
يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٧﴾
اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَ قَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٨﴾ وَ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾ فَرِحِيْنَ بِمَآ

اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ
يَحْزَنُوْنَ ۝١٧٠ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَضْلٍ ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٧١

आयत न० 165 से 171

और जब (जंगे उहद में) **तुम्हें ऐसी मुसीबत पहुंची जिससे दो गुना तुम** (जंगे बद्र में दुशमनों को) **पहुंचा चुके थे तो क्या ऐसे वक़्त में तुम** (अचम्भे से यह) **कहते हो कि** (बावजूद हमारे मुसलमान होने के) **यह** (मुसीबत और हार) **किधर से** (हुई यानी क्यों) **हुई, आप कह दीजिए कि यह हार तुम्हारी तरफ़ से हुई** (अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की राय के ख़िलाफ़ न करते तो न हारते), **बेशक अल्लाह को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत है** (जब तुम ने कहना माना अपनी क़ुदरत से तुम को जीत दी और जब कहने के ख़िलाफ़ किया तो हार दी)(165) **और जो मुसीबत तुम पर पड़ी जिस दिन कि दोनों फ़ौजें** (मुसलमानों और काफ़िरों की) **आपस में लड़ीं** (यानी जंगे उहद के दिन) **तो** (वो मुसीबत) **अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हुई** (क्योंकि उसमें कुछ भलाइयां छुपी थीं) **और** (उनमें एक भलाई यह है) **ताकि अल्लाह तआ़ला मोमिनों को भी** (परखा कर) **देख ले** (क्योंकि मुसीबत के वक़्त ईमान की सच्चाई का भी पता चल जाता है)(166) **और मुनाफ़िक़ों को भी देख लें और इन** (मुनाफ़िक़ों) **से** (शुरू जंग के वक़्त) **यह कहा गया कि** (जंग के मैदान में) **आओ** (फिर हिम्मत हो तो) **अल्लाह की राह में लड़ना या** (हिम्मत न हो तो गिनती ही बढ़ा कर) **दुशमनों को रोकना** (क्योंकि बहुत सी भीड़ देख कर कुछ तो उन पर रौब होगा और उससे शायद हट जाएं), **वो बोले कि अगर हम ढंग की लड़ाई देखते तो ज़रूर तुम्हारे साथ हो लेते** (लेकिन यह कोई लड़ाई है कि वो लोग तुम से तीन चार गुने ज़्यादा फिर उनके पास सामान भी ज़्यादा ऐसी हालत में लड़ना तबाही में पड़ना है, इस पर अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **ये मुनाफ़िक़ उस दिन** (जब कि ऐसा रूखा जवाब दिया था) **कुफ़्र से** (देखने में भी) **बहुत नज़दीक हो गये उस हालत के मुक़ाबिले कि वो** (पहले देखने में) **ईमान से** (कुछ तो) **नज़दीक थे** (क्योंकि पहले से वो दिल से मोमिन न थे मगर ज़बान से खुद को मुसलमान कहते थे अब असलीयत खुल गई) **ये लोग अपने मुंह से ऐसी बातें करते हैं जो उन के दिल में नहीं** (यानी दिल में तो यह है कि इन मुसलमानों का कभी साथ न दें चाहे लड़ाई ढंग की ही क्यों न हो), **और अल्लाह तआ़ला अच्छी तरह जानते हैं जो कुछ ये अपने दिल में रखते हैं**(167) **ये ऐसे लोग हैं कि** (खुद तो जिहाद में शरीक न हुए और) **अपने** (ख़ानदानी) **भाइयों के बारे में** (जो कि शहीद हो गये, घरों में) **बैठे बैठे**

बातें बनाते हैं कि अगर हमारा कहना मानते (यानी हमारे मना करने पर न जाते) **तो** (बेफ़ाइदा) **क़त्ल न किये जाते, आप कह दीजिए कि अच्छा तो अपने ऊपर से मौत को हटाओ अगर तुम** (इस बात में) **सच्चे हो** (क्योंकि मौत तो अपने वक़्त पर घर बैठे भी आ जाती है तो क़त्ल भी अपने वक़्त से टल नहीं सकता)(168) **और जो लोग अल्लाह तआला की राह में** (यानी दीन के वास्ते) **क़त्ल किये गये उन को** (और मुर्दों की तरह) **मुर्दा मत समझो, बल्कि वो लोग** (एक अलग ज़िन्दगी के साथ) **ज़िन्दा हैं** (और) **अपने रब के पास उन को रोज़ी भी मिलती है**(169) (और) **वो ख़ुश हैं उस चीज़ से जो उन को अल्लाह तआला ने अपनी महरबानी** (व करम) **से दी और** (जिस तरह वो अपने हाल पर ख़ुश हैं उसी तरह) **जो लोग** (अभी दुनिया में ज़िन्दा हैं और) **उन के पास नहीं पहुंचे** (बल्कि) **उन से पीछे रह गये हैं उन की भी इस हालत पर वो** (शहीद) **ख़ुश होते हैं कि** (अगर वो भी शहीद हो जाएं तो हमारी तरह) **उन पर भी न किसी तरह का डर होगा और न** (किसी तरह का) **ग़म होगा**(170) **वो** (अपनी हालत पर तो) **ख़ुश होते हैं अल्लाह तआला की नेमतों और महरबानी की वजह से** (जिस को उन्होंने देख लिया) **और** (दूसरों की हालत पर ख़ुश होते) **इस वजह से कि** (वहां जाकर देख लिया कि) **अल्लाह तआला ईमान वालों** (के नेक कामों) **का बदला बर्बाद नहीं करते** (तो जो उन के साथी पीछे रह गये और नेक कामों व जिहाद में लगे हैं उन को भी ऐसे इनआम मिलेंगे)(171)।

नोटः- जंगे उहद के शहीदों के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया कि अल्लाह तआल ने उन की रूहों को हरे परिन्दों के जिस्म में रख कर आज़ाद कर दिया है वो जन्नत की नहरों और बाग़ों के फलों से अपनी रोज़ी पाते हैं और फिर उन क़न्दीलों में आजाते हैं जो उन के लिए अर्श रहमान के नीचे लटकी हुई हैं। जब उन लोगों ने अपने आराम व ऐश की यह ज़िन्दगी देखी तो कहने लगे हमारे घर वाले दुनिया में हमारे मरने से दुखी हैं क्या कोई हमारे हाल की ख़बर उन को पहुंचा सकता है ताकि वो हम पर ग़म न करें और वो भी जिहाद में कोशिश करते रहें अल्लाह तआला ने कहा कि हम तुम्हारी यह ख़बर उन को पहुंचाए देते हैं इस पर यह आयत उतारी गई।

اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَ اتَّقَوْا اَجْرٌ
عَظِيْمٌ ﴿١٧٢﴾ۚ اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖۗ وَّ قَالُوْا

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿١٧٣﴾ فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّ اتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَ
اللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿١٧٤﴾ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَ خَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾

आयत न० 172 से 175

जिन लोगों ने अल्लाह व रसूल के कहने को मान लिया (जब कि उन को काफ़िरों का पीछा करने को बुलाया गया) **इस के बावजूद कि उन को** (अभी ताज़ा) **ज़ख़्म** (लड़ाई में) **लगा था, ऐसे नेक और परहेज़गार लोगों के लिए** (आख़रत में) **बड़ा सवाब है**(172) **ये ऐसे** (सच्चे) **लोग हैं कि** (कुछ) **लोगों नें** (जो) **उन से** (आकर) **कहा कि उन लोगों** (यानी मक्के वालों) **ने तुम्हारे** (मुक़ाबिले के) **लिए** (बड़ा) **सामान जमा किया है सो तुम को उन से डरना चाहिए तो इस** (ख़बर) **ने उनके ईमान** (के जोश) **को और ज़्यादा कर दिया और** (बहुत मज़बूती से यह) **कह** (कर बात को ख़त्म कर) **दिया कि हम को अल्लाह तआ़ला** (सब मुश्किलों के लिए) **काफ़ी है और वो ही सब काम सोंपने के लिए अच्छा है** (और इसी सोंपने को तवक्कुल कहते हैं)(173) **बस ये लोग अल्लाह की नेमत** (यानी वापसी में वहां के बाज़ार की ख़रीदारी से होने वाले नफ़े) **और महरबानी से भरे हुए** (इस तरह) **वापस आए कि उन को कोई नागवारी पेश नहीं आई और वो लोग** (इस क़िस्से में) **अल्लाह की मर्ज़ी के ताबे रहे** (इस की वजह से अपनी दुनिया की नेमतों से मालामाल हुए)**, और अल्लाह तआ़ला बड़े महरबानी वाले हैं**(174) (मुसलमानो) **इससे कोई ज़्यादा** (डरने की) **बात नहीं कि यह ख़बर देने वाला** (असल में) **शैतान है कि अपने** (मज़हब वाले) **दोस्तों से तुम को डरा**(ना चाह)**ता है तो, तुम उन से कभी मत डरना और सिर्फ़ मुझ ही से डरना अगर तुम ईमान वाले हो**(175)।

नोटः- जंगे उहद के अगले दिल काफ़िरों ने दोबारा हमला करने का इरादा किया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस का पता चल गया आपने दुशमनों का पीछा करने का हुक्म दिया तो वो सभी सहाबा जो ज़ख़्मों से चूर और थके हारे थे फ़ौरन तैयार होकर चल दिये इससे दुशमन डर कर भाग गये।

وَ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى
الْاٰخِرَةِ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ

اَلِيْمٌ ﴿١٧٧﴾ وَ لَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَ
لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَ
مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ۚ وَ اِنْ
تُؤْمِنُوْا وَ تَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾

आयत न० 176 से 179

और आप उन लोगों का कुछ ग़म न कीजिए जो जल्दी से कुफ़्र (की बातों) **में जा पड़ते** (हैं जैसे मुनाफ़िक़ कि ज़रा मुसलमानों का पल्ला हल्का देखा तो खुल्लम खुल्ला कुफ़्र की बातें करने लगते) **हैं, यक़ीन रक्खो वो लोग अल्लाह तआ़ला** (के दीन) **को ज़रा भी नुक़सान नहीं पहुंचा सकते,** (और इन काफ़िरों का भी ग़म न करें कि ये बदनसीब क्यों दोज़ख़ की तरफ़ जा रहे हैं) **क्योंकि अल्लाह तआ़ला यह चाहते हैं कि आख़रत में उन को कोई हिस्सा न दें और उन लोगों को बड़ी सज़ा भी होगी(176)** (और) **बेशक जितने लोगों ने ईमान** (को छोड़ कर उस) **की जगह कुफ़्र को अपना रक्खा है** (चाहे मुनाफ़िक़ हों या खुले काफ़िर और चाहे पास के हों या दूर के) **ये लोग** (भी) **अल्लाह तआ़ला** (के दीन) **को ज़रा भी नुक़सान नहीं पहुंचा सकते, और उन को दर्दनाक सज़ा होगी(177) और जो लोग कुफ़्र कर रहे हैं वो हरगिज़ यह न समझें कि हमारा उन को** (अज़ाब से) **मोहलत देना** (कुछ) **उन के लिए अच्छा है,** (हरगिज़ नहीं बल्कि) **हम उन को इस लिए मोहलत दे रहे हैं ताकि वो गुनाह में और आगे बढ़ जाएं** (और एक बारगी पूरी सज़ा मिले) **और** (दुनिया में अगर सज़ा न हुई तो क्या है आख़रत में तो) **उन को रूसवाई भरी सज़ा होगी(178) अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को इस हालत पर रखना नहीं चाहते जिस पर तुम अब हो** (कि कुफ़्र व ईमान और मोमिन व मुनाफ़िक़ में दुनिया की नेमतों में कोई फ़र्क़ नहीं बल्कि मुसलमानों पर मुसीबतों का उस वक़्त तक आते रहना ज़रूरी है) **जब तक कि नापाक** (यानी मुनाफ़िक़) **को पाक** (यानी सच्चे मोमिन) **से अलग न कर दिया जाए, और** (यह बात मुसीबतों और मुश्किलों के आने से पूरी हो सकती है और अगर कोई यह सोचे कि यह काम वही के वास्ते से बता कर भी हो सकता है तो उस का जवाब यह है कि) **अल्लाह तआ़ला** (अपनी हिकमत से) **ऐसी ग़ैब की बातों को तुम को** (बिना इम्तिहान के) **ख़बर नहीं कर**(ना चाह)**ते लेकिन हां जिस को** (इस तरह ख़बर करना) **ख़ुद चाहें और** (ऐसे हज़रात) **वो अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बर हैं उन को** (ग़ैब

की ख़बरों का पता देने के लिए अपने बन्दों में से) **चुन लेते हैं,** (और दुनिया में काफ़िरों पर अज़ाब न होना बल्कि ऐश व आराम मिलना और मुसलमानों पर कुछ मुसीबतों का आना अल्लाह की हिकमत से है ये बातें किसी से अल्लाह के राज़ी या नाराज़ होने की निशानी नहीं हो सकती) **बस अब तुम** (ईमान के पसन्द होने और कुफ़्र के नापसन्द होने में कोई शक न करो बल्कि) **अल्लाह पर और उसके सब रसूलों पर ईमान लाओ और अगर तुम ईमान ले आओ और** (कुफ़्र व गुनाह से) **परहेज़ रक्खो तो फिर तुम को बड़ा सवाब मिले**(179)।

नोटः- इस आयत से पता चला कि अल्लाह तआला ग़ैब की ख़बरें वही के वास्ते से पैग़म्बरों को बताते हैं तो पैग़म्बरों को भी सिर्फ़ उतना ही इल्म होता है जितना अल्लाह तआला दे देते हैं यानी इल्मे ग़ैब के मालिक सिर्फ़ अल्लाह तआला ही हैं।

وَ لَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا
بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ لِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۸۰﴾ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ
الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّ نَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَ قَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّ نَقُوْلُ ذُوْقُوْا
عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿۱۸۱﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۱۸۲﴾ اَلَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ
عَهِدَ اِلَيْنَاۤ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ
بِالْبَيِّنٰتِ وَ بِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۸۳﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ
قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَ الزُّبُرِ وَ الْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۱۸۴﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَ اِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَ اُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾ لَتُبْلَوُنَّ فِيْۤ
اَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ ۫ وَ لَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ مِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْۤا اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَ
اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۸۶﴾

आयत न० 180 से 186

और हरगिज़ न समझें ऐसे लोग जो (ज़रूरी मौक़ों में) **ऐसी चीज़** (के ख़र्च करने) **में कंजूसी करते हैं जो अल्लह तआला ने उन को अपनी महरबानी से दी है कि यह बात उनके लिए कुछ अच्छी होगी,** (हरगिज़ नहीं) **बल्कि यह बात उन के लिए बहुत ही बुरी है,** (क्योंकि)

जिस (माल) **में उन्होंने कंजूसी की होगी क़ियामत के दिन** (सांप बनाकर) **उन के गले में पट्टे की तरह डाल दिया जाएगा, और** (कंजूसी करना यूं भी बेवकूफ़ी है कि) **अख़ीर में** (जब सब मर जाएंगे) **सब आसमान व ज़मीन** (और जो कुछ उन के अन्दर है सब) **अल्लाह ही का रह जाएगा** (इसलिए समझदारी की बात यह है कि अभी अपनी मर्ज़ी से देदो ताकि सवाब के हक़दार बनो), **और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर रखते हैं** (इसलिए जो ख़र्च करो सच्चे मन के साथ अल्लाह के लिए करो)(180) **बेशक अल्लाह ने सुन ली है उन** (बे अदब) **लोगों की बात जिन्होंने** (मज़ाक़ में) **यह कहा कि** (नऊज़ुबिल्लाह) **अल्लाह तआ़ला फ़क़ीर हैं और हम मालदार हैं,** (और) **हम उन के कहे हुए को** (उनके आमाल नामे में) **लिख कर रहेंगे और** (इसी तरह) **उनका नबियों को नाहक़ क़त्ल करना भी** (उनके आमाल नामे में लिखा जाएगा) **और हम** (उन पर सज़ा जारी करने के वक़्त जितलाने के लिए) **कहेंगे कि** (लो) **आग के अज़ाब का मज़ा चक्खो**(181) (और उनका दिल दुखाने के लिए यह भी कहा जाएगा कि) **यह** (अ़ज़ाब) **उन** (कुफ़्र के) **कामों की वजह से है जो तुमने अपने हाथों समेटे हैं और बेशक अल्लाह तआ़ला बन्दों पर ज़ुल्म करने वाले नहीं**(182) **वो** (यहूदी) **ऐसे लोग हैं कि** (बिल्कुल झूट घड़ कर) **कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हम को** (पहले नबियों के वास्ते से) **हुक्म दिया था कि हम किसी के पैग़म्बर होने का यक़ीन न करें जब तक हमारे सामने** (ख़ास मोजिज़ा) **न दिखाए कि उस की क़ुर्बानी को आग खा जाए, आप कह दीजिए कि बेशक बहुत से पैग़म्बर मुझ से पहले बहुत सी निशानियां** (व मोजिज़े) **लेकर आए और ख़ुद यह मोजिज़ा भी जिस को तुम कह रहे हो तो तुम ने उन को क्यों क़त्ल किया था अगर तुम** (इस बात में) **सच्चे हो**(183) **सो अगर ये** (काफ़िर) **लोग आप को झुटलाएं तो** (ग़म न कीजिए क्योंकि) **बहुत से पैग़म्बरों को जो आप से पहले हुए हैं झुटलाया जा चुका है जो खुली- खुली निशानियां भी लेकर आए थे और** (छोटी-छोटी) **किताब और रौशन किताब लेकर** (जब काफ़िरों की यह आ़दत ही है कि नबियों को झुटलाते हैं तो फिर आप को कैसा ग़म है)(184) **हर जान** (दार) **को** (तुम में) **मौत का मज़ा चखना है, और** (मरने के बाद) **तुम को पूरा बदला** (तुम्हारी भलाई-बुराई का) **क़ियामत ही के दिन मिलेगा** (अगर दुनिया में काफ़िरों पर कोई सज़ा न दिखाई दे तो झुटलाने वालों को ख़ुशी का और ईमान वालों को ग़म का कोई मौक़ा नहीं), **तो जो आदमी दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया तो वो पूरा कामयाब** (हुआ इसी तरह जो जन्नत से अलग रहा और दोज़ख़ में भेजा गया वो पूरा नाकाम) **हुआ, और दुनिया की ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं सिर्फ़** (ऐसी चीज़ है जैसे) **धोके का**

सौदा (होता है जिस की बाहरी चमक-दमक देख कर ख़रीदने वाला फ़ंस जाता है बाद में उस की पोल खुल जाती है तो दुखी होता) **है**(185) (अभी क्या है मुसलमानो) **आगे** (आगे) **और आज़माए जाओगे अपने मालों** (के नुक़सान) **में और अपनी जानों** (के नुक़सान) **में, और आगे को और सुनोगे बहुत सी बातें दिल दुखाने की** (पहली) **किताब वालों से भी और मुशरिकों से भी, और अगर** (उन मौक़ों पर) **सब्र करोगे और** (शरीअत के ख़िलाफ़ बातों से) **परहेज़ रक्खोगे तो** (तुम्हारे लिए अच्छा होगा क्योंकि) **यह** (सब्र व परहेज़) **ज़रूरी हुक्मों में से है**(186)।

नोटः- पहले नबियों का यह मोजिज़ा हुआ है कि कोई चीज़ अल्लाह के नाम की निकाल कर किसी मैदान या पहाड़ी पर रख दी ग़ैब से एक आग आई और उस चीज़ को जला दिया, यह निशानी सदक़ा कुबूल होने की होती थी मतलब यहूदियों का यह था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह ख़ास मोजिज़ा नहीं दिखाया इसलिए हम इन पर ईमान नहीं लाते।

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَیِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَ لَا تَكْتُمُوْنَهٗ٘ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَ
اشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِیْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا یَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ یَفْرَحُوْنَ بِمَاۤ اَتَوْا وَّ یُحِبُّوْنَ اَنْ یُّحْمَدُوْا بِمَا
لَمْ یَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۱۸۸﴾ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ
عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۸۹﴾

आयत न० 187 से 189

और (यह बात भी सुनो) **जब अल्लाह तआ़ला ने** (पहली किताबों में) **किताब वालों से यह अहद लिया** (यानी उन को हुक्म दिया और उन्होंने मान लिया) **कि इस किताब** (की सब बातों) **को आम लोगों के सामने बयान कर देना और इस** (की किसी बात) **को** (दुनिया के फ़ाइदे के लिए) **न छुपाना, तो उन लोगों ने उस** (एहद) **को अपने पीठ पीछे फेंक दिया** (यानी उस पर अमल न किया) **और उस के बदले में** (दुनया का) **थोड़ा मोल ले लिया, तो बुरी चीज़ है जिस को वो लोग ले रहे हैं** (क्योंकि अन्जाम उस का दोज़ख़ की सज़ा है)(187) **जो लोग अपने** (किये बुरे) **कामों पर ख़ुश होते हैं और जो** (नेक) **काम नहीं किया उस पर अपनी तारीफ़ चाहते हैं तो ऐसे लोगों के बारे में यह न समझना कि वो** (दुनिया में ख़ास तरह के) **अज़ाब से बच जाएंगे** (हरगिज़ नहीं बल्कि दुनिया में भी कुछ सज़ा होगी) **और** (आख़रत में भी) **उन को दर्दनाक सज़ा**

होगी(188) और (सिर्फ़) **अल्लाह ही के लिए है हुकूमत आसमानों की और ज़मीन की, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं(189)।**

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾ الَّذِیْنَ یَذْکُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا
وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰی جُنُوْبِهِمْ وَ یَتَفَکَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا
عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَیْتَهٗ ؕ وَ مَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعْنَا
مُنَادِیًا یُّنَادِیْ لِلْاِیْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَیِّاٰتِنَا وَ تَوَفَّنَا مَعَ
الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾ رَبَّنَا وَ اٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰی رُسُلِكَ وَ لَا تُخْزِنَا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ﴿۱۹۴﴾ فَاسْتَجَابَ
لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّیْ لَاۤ اُضِیْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰی ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِیْنَ هَاجَرُوْا وَ
اُخْرِجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ وَ اُوْذُوْا فِیْ سَبِیْلِیْ وَ قٰتَلُوْا وَ قُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَیِّاٰتِهِمْ وَ لَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿۱۹۵﴾ لَا یَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِیْنَ
كَفَرُوْا فِی الْبِلَادِ ﴿۱۹۶﴾ مَتَاعٌ قَلِیْلٌ ۫ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۹۷﴾ لٰكِنِ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ
جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَیْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿۱۹۸﴾ وَ اِنَّ مِنْ
اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ یُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكُمْ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْهِمْ خٰشِعِیْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا یَشْتَرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا
قَلِیْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹۹﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَ صَابِرُوْا وَ
رَابِطُوْا ۫ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۲۰۰﴾

आयत न० 190 से 200

बेशक आसमानों और ज़मीन के बनाने में और एक के बाद दूसरे रात और दिन के आने जाने में (तौहीद के) **सबूत** (मौजूद) **हैं** (उन) **समझदार लोगों के लिए(190) जो** (हर हाल में दिल से भी और ज़बान से भी) **अल्लाह तआ़ला को याद करते हैं खड़े भी बैठे भी लेटे भी और आसमानों और ज़मीन के पैदा होने में** (अपनी अक़्ल से) **सोचते हैं** (और कहते हैं कि) **या रब हमारे आपने इस** (दुनिया) **को बे मतलब पैदा नहीं किया** (बल्कि इसमें भलाइयां रक्खी हैं जिसमें एक भलाई पैदा करने वाले के वजूद का सबूत है), **हम आप को** (बेमतलब पैदा करने से) **पाक समझते हैं**

सो हम को (मोमिन होने की वजह से) **दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लीजिए**(191) **या रब हमारे** (हम इसलिए दोज़ख़ के अ़ज़ाब से पनाह मांगते हैं कि) **बेशक आप** (असली सज़ा में) **जिस को दोज़ख़ में दाख़िल करें उस को सचमुच रूसवा ही कर दिया** (मुराद इससे काफ़िर है), **और ऐसे बेइन्साफ़ों का कोई भी साथ देने वाला नहीं**(192) **या रब हमारे हम ने एक** (सच्चे दीन की तरफ़) **पुकारने वाले को** (वास्ते से या बिना वास्ता) **सुना कि वो ईमान लाने के लिए ऐलान कर रहे हैं कि** (ऐ लोगों) **तुम अपने रब पर ईमान लाओ** (मुराद इससे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं) **सो हम** (उस हुक्म पर) **ईमान ले आए** (इसमें अल्लाह पर ईमान के साथ रसूल पर ईमान भी आगया), **या रब हमारे फिर** (इस के बाद हमारी यह दुआ़ है कि) **हमारे गुनाहों को मुआ़फ़ कर दीजिए और हमारी बुराइयों को मिटा दीजिए और हम को नेक लोगों के साथ** (शामिल रख कर) **मौत दीजिए** (यानी नेकी पर ख़ात्मा हो)(193) **या रब हमारे और हम को वो चीज़** (यानी सवाब व जन्नत) **भी दीजिए जिस का हम से अपने पैग़म्बरों के वास्ते आपने वादा किया है** (कि मोमिनों और नेक लोगों को बड़ा सवाब मिलेगा) **और हम को क़ियामत के दिन** (भी) **रूसवा न कीजिए** (जैसा कि कुछ को पहले सज़ा होगी फिर जन्नत में जाएंगे मतलब यह कि शुरू ही से जन्नत में दाख़िल कर दीजिए), **बेशक आप** (तो) **वादा ख़िलाफ़ी नहीं करते** (लेकिन हम को यह डर है कि जिन के लिए वादा है यानी मोमिन व नेक लोग कहीं ऐसा न हो ख़ुदा न करे उन में हम न हों यानी हम को ऐसा कर दीजिए और ऐसा ही रखिए जिससे इस क़ाबिल हो जाएं)(194) **तो क़ुबूल कर लिया उन की दुआ़ओं को उन के रब ने** (और कहा कि) **मैं किसी** (नेक) **काम करने वाले के** (नेक) **काम को बर्बाद नहीं करता** (कि उस का बदला न दिया जाए) **चाहे वो** (नेकी करने वाला) **मर्द हो या औरत** (दोनों के लिए एक ही क़ानून है, क्योंकि) **तुम** (दोनों) **आपस में एक दूसरे के हिस्से हो, तो जिन लोगों ने** (ईमान के साथ और मेहनत के काम भी किये जैसे हिजरत यानी) **वतन को छोड़ा और** (वो भी हंसी ख़ुशी, सैर सपाटे के लिए नहीं बल्कि इस तरह कि) **अपने घरों से** (तंग करके) **निकाले गये और** (इसके सिवा तरह-तरह की) **तकलीफ़ें पहुंचाई गईं** (और ये सब तकलीफ़ें) **मेरी राह में** (यानी मेरे दीन के लिए उन्होंने उठाईं और उन सब को उन्होंने सहन किया) **और जिहाद** (भी) **किया और** (बहुत से उनमें से) **शहीद** (भी) **हो गये** (और आख़ीर तक जिहाद में से न हटे तो ऐसे मेहनत के कामों पर नेमतें क्यों न मिलेंगी) **ज़रूर उन लोगों की सभी ग़लतियां** (जो मेरे हक़ के बारे में हो गई हों) **मुआ़फ़ कर दूंगा और ज़रूर उन को** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिन के** (महलों के) **नीचे नहरें बहती होंगी, यह बदला मिलेगा अल्लाह**

तआ़ला के पास से, और अल्लाह ही के पास (यानी उस के क़ब्ज़े में) **अच्छा बदला है**(195) (ऐ सच्चे दीन के चाहने वाले) **तुझ को इन काफ़िरों का** (रोज़गार या सैर सपाटे के लिए) **शहरों में चलना फिरना धोके में न डाल दे**(196) **यह कुछ दिनों की बहार है** (क्योंकि मरते ही इस का नामो निशान भी न रहेगा और) **फिर उन का ठिकाना** (सदा के लिए) **दोज़ख़ होगा, और वो बुरा ठिकाना है**(197) **लेकिन** (उन में से भी) **जो लोग अपने रब से डरें** (और मुसलमान व ताबेदार हो जाएं तो) **उन के लिए** (भी) **जन्नत के** (ऐसे) **बाग़ हैं जिन के** (महलों के) **नीचे नहरें बहती होंगी वो इन** (बाग़ों) **में सदा-सदा रहेंगे यह महमानी होगी अल्लाह की तरफ़ से, और जो अल्लाह के पास हैं** (यानी जन्नत की नेमतें) **ये नेक बन्दों के लिए बहुत अच्छी हैं** (काफ़िरों की कुछ दिनों की ऐश से)(198) **और बेशक कुछ लोग किताब वालों में से ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और इस किताब पर भी** (ईमान रखते हैं) **जो आप के पास भेजी गई** (यानी क़ुरआन) **और उस किताब पर भी जो उन के पास भेजी गई** (यानी तौरेत और इन्जील और) **अल्लाह तआ़ला से डरते हैं** (इस लिए ऐतक़ाद में हद से नहीं बढ़ते कि अल्लाह पर औलाद का झूटा इल्ज़ाम लगाएं और) **अल्लाह की आयतों के बदले** (दुनिया का) **थोड़ा मोल नहीं लेते, ऐसे लोगों को उन का नेक बदला मिलेगा उन के रब के पास,** (और इस में देर भी न लगेगी क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआ़ला जल्द ही हिसाब** (किताब कर देंगे और हिसाब करते ही सब का लेना देना बेबाक़) **कर देंगे**(199) **ऐ ईमान वालो** (तकलीफ़ों पर) **ख़ुद सब्र करो और** (जब काफ़िरों से मुक़ाबिला हो तो) **मुक़ाबिले में सब्र करो और** (जंग के ख़तरे के वक़्त) **मुक़ाबिले के लिए तैयार रहो, और** (हर हाल में) **अल्लाह तआ़ला से डरते रहो** (कि शरीअ़त की हदों से न निकलो) **ताकि तुम पूरे कामयाब हो** (आख़रत में तो ज़रूर ही और कभी-कभी दुनिया में भी)(200)।

4-सुरत-निसा

इस मदनी सूरत में 24 रूकू और 177 आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّ
نِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝١ وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا
تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۖ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ۗ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ۝٢ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا
تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً
اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۗ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝٣ وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ۗ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَىْءٍ
مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ۝٤

आयत न० 01 से 04

ऐ लोगो अपने रब (की मुख़ालफ़त) **से डरो जिस ने तुम को एक जान** (यानी आदम अलैहिस्सलाम) **से पैदा किया** (क्योंकि सब आदमियों की नस्ल उन्हीं से चली है) **और उस** (ही जान) **से उस का जोड़ा** (यानी उन की बीवी हव्वा को) **पैदा किया और** (फिर) **उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें** (दुनिया में) **फैला दिये, और** (तुम से फिर कहा जाता है कि) **तुम अल्लाह तआ़ला से डरो जिस का वास्ता देकर एक दूसरे से** (अपना हक़) **मांगा करते हो** (कि अल्लाह से डर कर मेरा हक़ देदो) **और रिश्तेदारी** (के हक़ बर्बाद करने) **से भी डरो, बेशक अल्लाह तआ़ला तुम सब** (की हालतों) **की ख़बर रखते हैं** (अगर मुख़ालफ़त करोगे सज़ा पाओगे)**(01) और जिन बच्चों का बाप मर जाए उन के माल उन्हीं को पहुंचाते रहो** (यानी उन्हीं के ख़र्च में लगाते रहो) **और** (जब तक तुम्हारे क़ब्ज़े में हो) **तुम** (उन के माल से) **अच्छी चीज़ से बुरी चीज़ को मत बदलो** (यानी ऐसा मत करो कि उन की अच्छी चीज़ तो निकाल ली जाए और बुरी चीज़ उन के माल में मिला दी जाए)**, और उनके मालों को मत खाओ अपने माल रहने तक** (लेकिन जब तुम्हारे पास कुछ न रहे तो अपने गुज़ारे के लिए अपनी महनत का बदला उन के माल से लेना जाइज़ है जैसा आगे आएगा)**, ऐसा काम करना** (कि उन का माल बिना ज़रूरत लिया जाए या उन की अच्छी चीज़

बदली जाए) **बड़ा गुनाह है(02) और अगर तुम को इस बात का ख़तरा** (भी) **हो** (और यक़ीन हो तो फिर तो ज़रूरी है) **कि तुम यतीम लड़कियों के** (महर के) **बारे में इन्साफ़ न कर सकोगे तो** (उन से निकाह मत करो बल्कि) **और** (हलाल) **औरतों से जो तुम को पसन्द हों निकाह कर लो** (क्योंकि वो मजबूर नहीं अपनी मर्ज़ी बता सकती हैं और एक मर्द चाहे) **दो-दो औरतों से** (निकाह कर ले) **और** (चाहे एक मर्द) **तीन-तीन औरतों से** (निकाह कर ले) **और** (चाहे एक मर्द) **चार-चार औरतों से** (निकाह कर ले)**, बस अगर तुम को** (पूरा) **ख़तरा इस का हो कि** (कई बीवियां कर के) **इन्साफ़ न रख सकोगे** (बल्कि किसी बीवी के ज़रूरी हक़ बर्बाद होंगे) **तो फिर एक ही बीवी पर बस करो या** (अगर देखो कि एक के हक़ भी अदा न होंगे तो) **जो बान्दी** (शरीअ़त के क़ाइदे से) **तुम्हारे पास हो वो ही सही, इस बात में** (यानी एक बीवी के रखने या सिर्फ़ बान्दी पर बस करने में) **ज़्यादती** (व बेइन्साफ़ी) **न होने की ज़्यादा उम्मीद है(03) और तुम लोग बीवियों के महर ख़ुश दिली से दे दिया करो, हां अगर वो बीवियां ख़ुश दिली से छोड़ दें तुम को उस महर में से कुछ हिस्सा** (या सारा) **तो** (इस हालत में) **तुम उस को खाओ** (बरतो) **ख़ुशी से मज़ेदार समझ कर(04)।**

नोटः- हदीस शरीफ़ में है ''ख़बरदार ज़ुल्म न करो और अच्छी तरह से समझ लो कि किसी आदमी का माल (दूसरे आदमी के लिए) हलाल नहीं है जब तक उस के जी की ख़ुशी से न लिया जाए''।

(मिशकात शरीफ़)

इस लिए अगर महर ख़ुशी से माफ़ कर दे तो जाइज़ है।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِىْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا
مَّعْرُوْفًا ۝ وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰىٓ اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا
تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ؕ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ
فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝

आयत न० 05 से 06

और (अगर यतीम बालिग़ हो जाएं लेकिन कम समझ हों तो) **तुम** (उन) **कम समझ वालों को अपने** (यानी उन के) **वो माल मत दो जिन को अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे** (सब के) **लिए ज़िन्दगी का सामान बनाया है** (मतलब यह कि माल क़द्र की चीज़ है उन को अभी मत दो कि

बेक़द्री करके उड़ा देंगे) **और उन मालों में** (से) **उन को खिलाते रहो पहनाते रहो और उन से भली बात कहते रहो** (यानी उन को तसल्ली देते रहो कि माल तुम्हारा है तुम्हारी भलाई ही की वजह से अभी तुम्हारे हाथ में नहीं दिया ज़रा समझदार हो जाओगे तो तुम को ही दे दिया जाएगा)(05) **और तुम यतीमों को** (बालिग़ होने से पहले होशियारी व सलीक़े की बातों में) **आज़मा लिया करो** (जैसे कुछ सौदा सामान उन से मंगा लिया और देखा कि कैसे सलीक़े से ख़रीद कर लाए या कोई चीज़ बेंचने के लिए देदी और देखा कि उस को किस तरह बेंचा) **यहां तक** (उन को आज़माया जाए) **कि जब वो निकाह** (की उम्र) **को पहुंच जाएं** (यानी बालिग़ हो जाएं), **फिर** (बालिग़ होने व आज़माने के बाद) **अगर उन में समझदारी** (व सलीक़ा) **देखो तो उन के माल उन के हवाले कर दो** (और अगर अभी सलीक़ा न देखो तो कुछ और दिन हवाले न किया जाए), **और उन** (यतीमों के) **मालों को ज़रूरत से ज़्यादा उठा कर और यह सोच कर कि ये बालिग़ हो जाएंगे** (फिर उन को देना पड़ेगा) **जल्दी-जल्दी उड़ा कर मत खा डालो, और** (यतीमों का ज़िम्मेदार) **जो आदमी गुन्जाइशदार हो** (यानी अपनी ज़रूरत पूरी करने का सामान रखता हो) **तो वो तो** (यतीम का माल खाने से) **अपने को बिल्कुल बचाए, और जो आदमी ज़रूरत मन्द हो तो वो ठीक हिसाब से** (यानी जिसमें ज़रूरी ज़रूरतें पूरी हो जाएं) **खाले** (बरत ले), **फिर जब** (बालिग़ व समझदार होने के बाद) **उन के माल उन के हवाले करने लगो तो** (अच्छा है कि) **उन** (के माल उन को देने) **पर गवाह भी कर लिया करो** (शायद किसी वक़्त बात उलझे तो गवाह काम आएं), **और** (यूं तो) **अल्लाह तआला ही हिसाब लेने वाला काफ़ी है** (वो तो दिलों तक की बात को जानते हैं उन से कुछ छुपा नहीं सकते)(06)।

नोटः- यतीमों के माल की देख रेख करना उन के ज़िम्मेदार के ऊपर फ़र्ज़ है इस लिए गुन्जाइशदार को कोई महनताना नहीं लेना चाहिए लेकिन ग़रीब ज़िम्मेदार अपने गुज़ारे के लिए ज़रूरत भर महनताना ले सकता है।

لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَ الْاَقْرَبُوْنَ ۪ وَ لِلنِّسَآءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَ الْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ
مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ؕ نَصِيبًا مَّفْرُوْضًا ۝٧ وَ اِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَ
قُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٨ وَ لْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ ۪ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَ
لْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝٩ اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَ سَيَصْلَوْنَ
سَعِيْرًا ۝١٠ ع

आयत न० 07 से 10

मर्दों के लिए भी (चाहे छोटे हों या बड़े) **हिस्सा** (तय किया हुआ) **है उस चीज़ में से जिस को** (उन मर्दों के) **मां बाप और** (या दूसरे) **बहुत नज़दीकी रिश्तेदार** (अपने मरने के वक़्त) **छोड़ जाएं, और** (इसी तरह) **औरतों के लिए भी** (चाहे छोटी हों या बड़ी) **हिस्सा** (तय किया हुआ) **है उस चीज़ में से जिस को** (औरतों के) **मां बाप और** (या दूसरे) **बहुत नज़दीकी रिश्तेदार** (अपने मरने के वक़्त) **छोड़ जाएं चाहे वो** (छोड़ी हुई) **चीज़ कम हो या ज़्यादा हो** (सब में से मिलेगा), **हिस्सा** (भी ऐसा जो अल्लाह की तरफ़ से) **तय किया हुआ** (है और किसी को अपनी राय देने का कोई हक़ नहीं) **है(07) और जब** (वारिसों में मीरास के) **बान्टने के वक़्त** (ये लोग) **मौजूद हों** (यानी दूसरे) **रिशतेदार** (जिन का मीरास में हक़ नहीं) **और यतीम और ग़रीब लोग** (इस उम्मीद से कि शायद हम को भी कुछ मिल जाए और हो सकता है कि रिशतेदार तो अपना हक़ सोच कर और दूसरे लोग ख़ैर ख़ैरात की उम्मीद करके) **तो उन को भी उस** (माल) **में** (जितना बालिग़ों का हिस्सा है उस में) **से कुछ देदो और उन के साथ भलाई** (और नर्मी) **से बात करो** (वो भलाई यह है कि रिशतेदारों को तो समझा दो कि शरीअ़त से इसमें तुम्हारा हिस्सा नहीं है हम मजबूर हैं और दूसरों से भलाई यह कि देकर अहसान न जिताओ)(08) **और** (यतीमों के बारे में ऐसे) **लोगों को डरना चाहिए कि अगर** (वो) **अपने बाद छोटे-छोटे बच्चे छोड़** (कर मर) **जाएं तो उन** (बच्चों) **की उन** (लोगों) **को फ़िक्र हो** (कि देखिए उन को कोई न सताए तो ऐसे ही दूसरे के बच्चों के लिए भी सोचना चाहिए कि हम उन को न सताएं), **सो** (इस बात को सोच कर) **उन लोगों को चाहिए कि** (यतीमों के बारे में) **अल्लाह तआ़ाला** (के हुक्म की मुख़ालफ़त) **से डरें** (यानी न तो सताएं) **और** (ज़बान से भी उन से) **मुनासिब बात कहें** (इसमें तसल्ली और दिल रखने की बात भी आ गई और अदब तमीज़ सिखाने की बात भी आगई)(09) **बेशक जो लोग यतीमों का माल नाहक़ खाते** (बरतते) **हैं और कुछ नहीं अपने पेट में** (दोज़ख़ की) **आग** (के अंगारे) **भर रहे हैं** (यानी अन्जाम उस खाने का यह होने वाला है), **और** (इस अन्जाम के होने में कुछ ज़्यादा देर नहीं क्योंकि) **जल्दी ही** (दोज़ख़ की जलती) **आग में दाख़िल होंगे** (वहां यह अन्जाम दिखाई देगा)(10)।

नोटः- ग़ैर वारिसों को मीरास में से कुछ देना वाजिब नहीं लेकिन अगर कुछ देदें तो सवाब है अलबत्ता बालिग़ लोग अपने हिस्से में से दे सकते हैं नाबालिग़ों के हिस्से से देना जाइज़ नहीं।

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ ۗ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا
تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ؕ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ
فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١﴾ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ
الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ
فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ
كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗٓ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي
الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿١٢﴾

आयत न० 11 से 12

अल्लाह तआला तुम को हुक्म देता है तुम्हारी औलाद के (मीरास पाने के) **बारे में** (वो यह कि) **लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के बराबर** (यानी हर लड़के को एक लड़की के हिस्से से दूना मिलेगा)**, और अगर** (औलाद में) **सिर्फ़ लड़कियां ही हों चाहे दो** (या दो) **से ज़्यादा हों तो उन लड़कियों को दो तिहाई मिलेगा उस माल का जो मरने वाला छोड़ गया है, और अगर एक ही लड़की हो तो उस को** (कुल माल का) **आधा मिलेगा** (बाक़ी दूसरे ख़ास रिशतेदारों का हक़ है)**, और मां बाप** (को मीरास मिलने में तीन सूरतें हैं एक सूरत तो उन) **के लिए यानी दोनों में से हर एक के लिए मरने वाले के माल में छटा-छटा हिस्सा** (तय) **है अगर मरने वाले के कुछ औलाद हो** (चाहे लड़का या लड़की चाहे एक या ज़्यादा) **और अगर मरने वाले के कुछ औलाद न हो और** (सिर्फ़) **उसके मां बाप ही उस के वारिस हों** (यानी भाई बहन भी न हों) **तो** (इस सूरत में) **उस की मां का एक तिहाई है** (और बाक़ी दो तिहाई बाप का)**, और अगर मरने वाले के एक से ज़्यादा भाई बहन** (किसी क़िस्म के) **हों** (चाहे सगे या सौतेले और औलाद न हों मां बाप हों यह तीसरी सूरत है) **तो** (इस सूरत में) **उस की मां को** (उस माल का) **छटा हिस्सा मिलेगा** (और बाक़ी बाप को मिलेगा, ये यब हिस्से) **वसीयत** (किये हुए माल को) **निकाल लेने के बाद कि मरने वाला उस की वसीयत कर जाए या क़र्ज़** (अगर हो तो उस को भीं निकाल लेने)

के बाद (बांटे जाएंगे), **तुम्हारे बाप दादा और औलाद जो हैं तुम** (उन के बारे में) **पूरी तरह यह नहीं जान सकते कि उन में कौन सा आदमी तुम को** (दुनिया या आख़िरत का) **नफ़ा पहुंचाने में ज़्यादा नज़दीक** (हो सकता) **है,** (बस) **यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से तय कर दिया गया** (है किसी को इस में अपनी राय देने का कोई हक़ नहीं) **है,** (और) **बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले और हिकमत वाले हैं(11) और तुम को आधा मिलेगा उस माल का जो तुम्हारी बीवियां छोड़ जाएं अगर उन के कुछ औलाद** (ज़िन्दा) **न हो** (न लड़का न लड़की न एक न ज़्यादा), **और अगर उन बीवियों के कुछ औलाद हो** (चाहे तुम से हो या पहले शौहर से) **तो** (उस सूरत में) **तुम को उन के माल से एक चौथाई मिलेगा** (लेकिन हर सूरत में यह मीरास) **वसीयत** (किये हुए माल के) **निकालने के बाद कि वो इस की वसीयत कर जाएं या क़र्ज़** (अगर हो तो उसके निकालने) **के बाद** (मिलेगी), **और बीवियों को चौथाई मिलेगा उस माल का जिस को तुम छोड़ जाओ** (चाहे वो एक हो या कई हों तो वो चौथाई सब में बराबर बांटा जाएगा) **अगर तुम्हारे कुछ औलाद** (ज़िन्दा) **न हो** (न लड़का न लड़की न एक न ज़्यादा), **और अगर तुम्हारे कुछ औलाद हो तो** (इस सूरत में) **उन को** (चाहे वो एक हो या कई) **तुम्हारे छोड़े हुए माल से आठवां हिस्सा मिलेगा** (और बाक़ी दूसरे वारिसों को मिलेगा, लेकिन यह मीरास) **वसीयत** (किये हुए माल के) **निकालने के बाद कि तुम उस की वसीयत कर जाओ या क़र्ज़** (अगर हो तो उस के भी निकालने) **के बाद** (मिलेगी), **और अगर कोई मरने वाला जिस की मीरास दूसरों को मिलेगी चाहे वो** (मरने वाला) **मर्द हो या औरत ऐसा हो जिस के न बाप दादा** (ज़िन्दा) **हों और न औलाद** (हो और न औलाद की औलाद) **हो और उस** (मरने वाले) **के एक भाई या एक बहन** (मां शरीक) **हो तो उन दोनों में से हर एक को छटा हिस्सा मिलेगा, और अगर ये इससे** (यानी एक से) **ज़्यादा हों** (जैसे दो हों या और ज़्यादा) **तो वो सब एक तिहाई में** (बराबर के) **साझी होंगे** (और उनमें लड़का व लड़की का बराबर हिस्सा है और बाक़ी मीरास दूसरे वारिसों को और अगर कोई और न हो तो फिर उन्हीं को दी जाएगी यह की हुई) **वसीयत** (का माल) **निकालने के बाद जिस की वसीयत कर दी जाए या** (अगर) **क़र्ज़** (हो तो उस के भी निकालने) **के बाद** (मिलेगी) **शर्त यह है कि** (वसीयत करने वाला) **किसी** (वारिस) **को नुक़सान न पहुंचाए, यह** (जो यहां तक बताया गया) **अल्लाह का हुक्म है, और अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानने वाले हैं** (कि कौन मानता है कौन नहीं मानता और न मानने वाले को इस लिए फ़ौरन सज़ा नहीं देते कि बड़ी) **सहार वाले** (भी) **हैं(12)।**

नोटः- अगर बीवी का महर अदा न किया हो तो वो भी क़र्ज़ में दाख़िल है।

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۳﴾ وَ مَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ يَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَ لَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۴﴾

आयत न० 13 से 14

ये सब (मीरास और यतीमों के बारे में बताए हुए) **हुक्म अल्लाह तआ़ला के क़ानून हैं, और जो आदमी अल्लाह और उसके रसूल का कहना मानेगा** (यानी इन क़ानूनों की पाबन्दी करेगा) **अल्लाह तआ़ला उस को ऐसी जन्नतों में** (फ़ौरन) **दाख़िल कर देंगे जिन के** (महलों के) **नीचे नहरें बहती होंगी** (ऐसे लोग) **सदा-सदा उन** (जन्नतों) **में रहेंगे, और यह बड़ी कामयाबी है(13) और जो आदमी अल्लाह और उसके रसूल का कहना न मानेगा और बिल्कुल ही उस के क़ानून की हदों से निकल जाएगा** (यानी पाबन्दी को ज़रूरी भी न समझेगा और यह हालत कुफ़्र की है) **उस को** (दोज़ख़ की) **आग में दाख़िल करेंगे जिसमें वो सदा-सदा रहेगा, और उस को ऐसी सज़ा होगी जिस में रूसवाई भी है(14)।**

وَ الّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي
الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰىهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿۱۵﴾ وَ الَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَ
اَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۱۶﴾ اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ
بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷﴾ وَ لَيْسَتِ التَّوْبَةُ
لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰۤى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَ لَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَ هُمْ
كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۸﴾

आयत न० 15 से 18

और जो औरतें बेहयाई का काम (यानी बदकारी) **करें तुम्हारी औरतों में से तो तुम लोग उन औरतों** (के इस काम) **पर अपनों में से** (यानी मुसलमान, आज़ाद, समझदार, बालिग़) **चार मर्द गवाह कर लो** (ताकि उन की गवाही पर हाकिम सज़ा जारी करें)**, तो अगर वो गवाही देदें तो** (उन की सज़ा यह है कि) **तुम उन को** (हाकिम के हुक्म से) **घरों के अन्दर क़ैद रक्खो यहां तक कि**

(या तो) **मौत उन का ख़ातमा करदे** (और) **या अल्लाह तआ़ला उन के लिए कोई और रास्ता पैदा कर दें** (यानी दूसरा हुक्म भेज दें, और बाद में वो हुक्म शादी शुदा के लिए संगसार यानी पथराव करके हलाक कर देना और कुंवारों के लिए सौ कोड़े मारना बताया गया)(15) **और जो भी दो आदमी** (यानी मर्द या औरत) **वो बेहयाई का काम** (यानी बदकारी) **करें तुम में से** (यानी बालिग़ व समझदार मुसलमानों में से) **तो उन दोनों को तकलीफ़ पहुंचाओ** (यानी सज़ा दो) **फिर** (सज़ा के बाद) **अगर वो दोनों** (पिछली ग़लती से) **तौबा करलें और** (आगे के लिए अपना) **सुधार करलें** (यानी फिर ऐसी ग़लती न करें) **तो उन दोनों के पीछे मत पड़ो,** (क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआ़ला तौबा कुबूल करने वाले हैं** (इसलिए अपनी रहमत से अल्लाह तआ़ला ने उन की ग़लती मुआ़फ़ कर दी, फिर तुम को भी उन के पीछे न पड़ना चाहिए)(16) **तौबा** (जिस का) **कुबूल करना अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे है वो तो उन्हीं की है जो बेवकूफ़ी से कोई गुनाह** (छोटा हो या बड़ा हो) **कर बैठते हैं फिर जल्दी ही** (यानी मौत सामने आने से पहले) **तौबा कर लेते हैं सो ऐसों को तो अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ कर देते हैं, और अल्लाह तआ़ला अच्छी तरह जानते हैं** (कि किसने दिल से तौबा की) **हिकमत वाले हैं** (कि दिल से तौबा करने वाले को रूसवा नहीं करते)(17) **और ऐसे लोगों की तौबा** (कुबूल) **नहीं जो** (बराबर) **गुनाह करते रहते हैं यहां तक कि जब उन में से किसी के सामने मौत ही आ खड़ी हुई** (यानी उस को दूसरी दुनिया की चीज़ें दिखाई देने लगीं) **तो कहने लगा कि अब मैं तौबा करता हूं** (बस न तो ऐसों की तौबा कुबूल) **और न उन लोगों की** (तौबा यानी ईमान लाना ऐसे वक़्त का कुबूल है) **जिन को कुफ़्र की हालत पर मौत आ जाती है, उन** (काफ़िर) **लोगों के लिए हमने एक दर्दनाक सज़ा** (यानी दोज़ख़ की सज़ा) **तैयार कर रक्खी है**(18)।

नोटः- हदीस शरीफ़ में सच्चे दिल से तौबा करने वाले के बारे में आता है कि ''गुनाह से तौबा करने वाला अल्लाह का प्यारा है, और जिसने गुनाह से तौबा कर ली वो ऐसा हो गया जैसे उसने गुनाह किया ही नहीं था। और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की तौबा उस वक़्त तक कुबूल करते हैं जब तक उस पर मौत का घर्रा न आ जाए''। (यानी सब को दिखाई देने लगे कि अब इस की मौत का वक़्त आ गया)। (इब्ने माजा)

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ
اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّ

يَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿١٩﴾ وَ اِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّ اٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا
تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٢٠﴾ وَ كَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ
وَّ اَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿٢١﴾

आयत न० 19 से 21

ऐ ईमान वालो! तुम को यह बात हलाल नहीं कि औरतों के (माल या जान के) **जबरन मालिक हो जाओ, और उन औरतों को इस लिए क़ैद मत करो** (यानी निकाह से मत रोको) **कि जो कुछ तुम लोगों ने** (यानी तुम ने या तुम्हारे रिशतेदारों ने) **उन को दिया है उसमें का कोई हिस्सा** (भी उन से) **वसूल कर लो मगर** (कुछ सूरतों में उन से माल लेना या उन को क़ैद करना जाइज़ है) **यह कि वो औरतें खुली हुई बेहयाई करें** (जैसे कहना न मानना या बदकारी करना)**, और** (आगे शौहरों को हुक्म है कि) **इन औरतों के साथ अच्छी तरह गुज़र बसर किया** (करो यानी बरताव भी अच्छा हो और ख़र्च का भी ध्यान रक्खा) **करो, और अगर** (किसी वजह से) **वो तुम को पसन्द न हों** (मगर उन्होंने कोई ग़लती न की हो) **तो** (तुम यह सोच कर सब्र करो कि) **हो सकता है कि तुम एक चीज़ को पसन्द न करो और अल्लाह तआला ने उस के अन्दर कोई** (दीन या दुनिया की) **बड़ी भलाई रक्खी हो** (जैसे तुम्हारी ख़िदमत व आराम का ध्यान रखने वाली और हमदर्द हो या उससे कोई औलाद ऐसी हो जो आख़रत की मददगार हो जाए, और ना पसन्द चीज़ पर सब्र करने का सवाब तो ज़रूर मिलेगा)(19) **और अगर तुम** (ख़ुद अपनी चाहत की वजह से) **बजाए एक बीवी के** (यानी पहली के) **दूसरी बीवी करना चाहो** (और पहली बीवी की कोई ग़लती न हो) **और तुम उस को** (महर या वैसे ही तोहफ़े में) **बहुत सा माल दे चुके हो** (चाहे हाथ में सौंप दिया हो या महर में देना तय किया हो) **तो तुम उस** (दिये हुए या तय किये हुए) **में से** (औरत को तंग करके) **कुछ भी** (वापस) **मत लो** (और तंग करके मुआफ़ कराना भी ऐसा ही है), **क्या तुम उस को** (वापस) **लेते हो** (उस पर कहना न मानने या बदकारी का) **झूटा इल्ज़ाम रख कर और** (उस के माल में) **खुले गुनाह** (यानी जुल्म) **में पड़ कर**(20) **और तुम उस** (दिये हुए) **को कैसे लेते हो हालांकि तुम आपस में एक दूसरे से अकेले में मिल चुके हो** (यानी मिलाप कर चुके हो) **और वो औरतें तुम से एक पक्का वादा ले चुकी हैं** (निकाह के वक़्त ही महर देने का वादा हो जाता है ऐसे ही दिये हुए तोहफ़े को वापस लेना भी जाइज़ नहीं है)(21)।

नोटः- दिये हुए माल को वापस लेने की जो सूरत ऊपर बयान हुई यह इस्लाम के शुरू में थी बाद में यह क़ानून बदल दिया गया अब इस तरह वापस लेना जाइज़ नहीं ऐसे ही घरों में क़ैद करने का हुक्म भी बदल गया।

وَ لَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّ مَقْتًا ؕ وَ سَآءَ سَبِیْلًا ﴿۲۲﴾
حُرِّمَتْ عَلَیْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَ بَنٰتُكُمْ وَ اَخَوٰتُكُمْ وَ عَمّٰتُكُمْ وَ خٰلٰتُكُمْ وَ بَنٰتُ الْاَخِ وَ بَنٰتُ الْاُخْتِ وَ اُمَّهٰتُكُمُ
الّٰتِیْۤ اَرْضَعْنَكُمْ وَ اَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَ اُمَّهٰتُ نِسَآىٕكُمْ وَ رَبَآىٕبُكُمُ الّٰتِیْ فِیْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآىٕكُمُ الّٰتِیْ
دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ؗ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ ؗ وَ حَلَآىٕلُ اَبْنَآىٕكُمُ الَّذِیْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَ
اَنْ تَجْمَعُوْا بَیْنَ الْاُخْتَیْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ﴿۲۳﴾

आयत न० 22 से 23

और तुम उन अ़ौरतों से निकाह मत करो जिन से तुम्हारे बाप (या दादा या नाना) **ने** (पहले कभी) **निकाह किया हो मगर जो बात पहले हो चुकी हो** (आगे कभी ऐस न हो), **बेशक यह** (बात अक़्ल से भी) **बड़ी बेशर्मी और** (भले लोगों में) **बहुत ही नफ़रत की बात है, और** (शरीअ़त से भी) **बहुत बुरा तरीक़ा है(22) तुम पर** (ये अ़ौरतें) **हराम की गई हैं** (यानी उन से निकाह करना हराम और नाजाइज़ है) **तुम्हारी माएं और तुम्हारी बेटियां** (मां में दादी नानी सब आ गईं और बेटी में नवासी पोती सब आ गईं) **और तुम्हारी बहनें** (तीनों क़िस्म की बहनें सगी यानी मां बाप एक हों व सौतेली यानी बाप एक मां अलग-अलग या मां एक बाप अलग-अलग हों) **और तुम्हारी फूफ़ियां** (इसमें बाप की और दादा नाना की तीनों क़िस्म की बहनें भी आ गईं) **और तुम्हारी ख़ालाएं** (इसमें मां की और नानी दादी की तीनों क़िस्म की बहनें भी आ गईं) **और भतीजियां** (इसमें तीनों क़िस्म के भाइयों की औलाद आ गईं) **और भांजियां** (इसमें तीनों क़िस्म की बहनों की औलाद आ गई) **और तुम्हारी वो माऐं जिन्होंने तुम को दूध पिलाया है** (यानी अन्ना) **और तुम्हारी वो बहनें जो दूध पीने की वजह से बहन हैं** (यानी तुमने उन की असली मां या दूध पिलाने वाली मां का दूध पिया है या उन्होंने तुम्हारी असली मां या दूध पिलाने वाली मां का दूध पिया है, चाहे अलग-अलग वक़्त में पिया हो) **और तुम्हारी बीवियों की माएं** (इसमें बीवी की दादी नानी सब आ गईं) **और तुम्हारी बीवियों की बेटियां** (इसमें बीवी की सब औलाद आ गईं) **जो कि** (अक्सर) **तुम्हारी परवरिश में रहती हैं** (मगर वो लड़कियां) **उन बीवियों से** (हों) **कि जिन के साथ तुमने मिलाप किया हो**

(यानी किसी अ़ौरत के साथ सिर्फ़ निकाह करने से उस की लड़की से निकाह हराम नहीं बल्कि जब उस औरत से मिलाप भी हो जाए जब लड़की से निकाह करना हराम होता है)**, और अगर** (अभी तक) **तुमने उन बीवियों से मिलाप न किया हो** (चाहे निकाह हो चुका था) **तो** (ऐसी बीवी की लड़की के साथ निकाह करने में) **तुम को कोई गुनाह नहीं, और तुम्हारे उन बेटों की बीवियां** (भी हराम हैं यानी उन से भी निकाह जाइज़ नहीं) **जो कि तुम्हारी नस्ल में हों** (इसमें सब औलाद की बीवियां आ गईं और नस्ल की क़ैद का मतलब यह है कि मुंह बोले यानी ले पालक बेटे की बीवी हराम नहीं) **और यह** (बात भी हराम है) **कि तुम दो बहनों को** (नस्ली हों या दूध शरीक) **एक साथ** (निकाह में) **रक्खो लेकिन जो** (इस हुक्म से) **पहले हो चुका** (वो मुअ़ाफ़ है)**, बेशक अल्लाह तअ़ाला बड़े बख़्शने वाले बड़े रहमत वाले** (हैं कि रहमत से गुनाह मुअ़ाफ़ कर देते) **हैं**(23)।

नोटः- दो बहनों को निकाह में रखना हराम है चाहे वो बहनें सगी हों या सौतेली या दूध शरीक हों लेकिन तलाक़ हो जाने के बाद दूसरी बहन से निकाह जाइज़ है मगर पहली बहन की इद्दत पूरी हो जाने के बाद और इसी तरह बीवी की फूफी या भतीजी और ख़ाला या भानजी से भी बीवी की मौजूदगी में निकाह जाइज़ नहीं।